धीरज धर नित करत कमाई ।
प्रेम जगावत बिरह सम्हार ॥ ७ ॥
घंटा संख सुनी धुन मिरदंग ।
सारंगी सुनी मुरली सार ॥ ८ ॥
सुन धुन बीन हुई मस्तानी ।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
पहुंच गई अब निज घरबार ॥१०॥

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया उमंग भरी ।
आज लाई आरती साज ॥ १ ॥
घंटा संख बजी धुन नभपुर ।
गगन सुनाई मिरदंग गाज ॥ २ ॥
भाव बढ़ा सतगुरु चरनन में ।
उन दिया भक्ति का दाज ॥ ३ ॥
मेहर हुई कल मल सब नाशे ।
छोड़ दिया मन कपटी पाज ॥ ४ ॥

त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया।
तीन लोक का मिल गया राज ॥ ५ ॥
मन माया से नाता टूटा।
काल करम का छूटा बाज ॥ ६ ॥
सुन में जाय मानसर न्हाई।
हो गई सूरत निरमल आज ॥ ७ ॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई।
मुरली बीन रही जहां बाज ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया बिचारी।
आज किया मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥
क्या मुख ले उन महिमां गाऊं।
कहत कहत मोहिं आवे लाज ॥१०॥

॥ शब्द ८८ ॥

सुरतिया परख रही।
घट में गुरु दया अपार ॥ १ ॥
निपट अजान चरन में आई।
गुरु कीना मुझ से प्यार ॥ २ ॥

बालक सम गुरु मोहिं निहारा।
चरन ओट दे लिया सम्हार ॥ ३ ॥
किरपा कर मोहिं जुगत बताई।
शब्द भेद दिया सब का सार ॥ ४ ॥
समझ बूझ मोहिं आपहि दीनी।
संसय भरम दिये सब टार ॥ ५ ॥
प्रेम सहित गुरु बानी गाऊं।
राधास्वामी नाम जपूं हरबार ॥ ६ ॥
प्रेमी जन की सेवा करती।
धर गुरु चरनन भाव और प्यार ॥ ७ ॥
सतसंग बचन उमंग से सुनती।
धरती मन में कर बीचार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भरोसा भारी।
धार रही परतीत सम्हार ॥ ९ ॥
सब बिधि काज सवारें मेरा।
राधास्वामी अपनी ओर निहार ॥१०॥
राधास्वामी परम दयाल कृपानिधि।
अपनी दया से लिया मोहिं उबार ॥११॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया निरख रही।
घट माहिं रूप गुरु मन भावन ॥ १ ॥
जनम जनम के पातक नासे।
लग गुरु चरन हुई पावन ॥ २ ॥
सतसंगत में अति हुलसानी।
दूर हुई मन की धावन ॥ ३ ॥
सार भेद गुरु दिया बताई।
मेट दई जग की भावन ॥ ४ ॥
करम कटाये भरम नसाये।
या जग में अब नहिं आवन ॥ ५ ॥
गुरु परतीत बढ़ी हिये अंतर।
नित नई प्रीत चरन लावन ॥ ६ ॥
मन और सुरत जोड़ चरनन में।
धुन रस पाय अधर जावन ॥ ७ ॥
सहसकंवल होय त्रिकुटी धावत।
जहां वहां गुरु पद दरसावन ॥ ८ ॥

मन का संग तज चढ़ी अधर में ।
सुन में जा बेनी न्हावन ॥ ९ ॥
मुरली धुन सुन सतपुर आई ।
लगी सतगुरू के गुन गावन ॥१०॥
चरन सरन राधास्वामी पाई ।
अजर अमर घर सुख पावन ॥११॥

॥ शब्द ९० ॥

सुरतिया प्रीत भरी ।
अब लाई आरती जोड़ ॥ १ ॥
दीन अधीन चित्त ले थाली ।
जोत जगाई मन को मोड़ ॥ २ ॥
प्रेम भरी गुरू आरत गाती ।
शब्द किया अब घट में शोर ॥ ३ ॥
घंटा संख बजी धुन नभ में ।
सिरदंग गाजी और घन घोर ॥ ४ ॥
आनंद अधिक हुआ अब मन में ।
दूर हुआ सब मोर और तोर ॥ ५ ॥

ररंकार धुन सुनी चढ़ सुन में।
घट गया काल करम का ज़ोर ॥ ६ ॥
भंवरगुफा मुरली धुन पाई।
रैन गई अब हो गया भोर ॥ ७ ॥
वहां से भी फिर आगे चाली।
बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ८ ॥
अलख पुरुष का धाम निहारा।
अगम लोक चढ़ पाई ठौर ॥ ९ ॥
उमंग अंग ले अधर सिधारी।
राधास्वामी धाम गई मैं दौड़ ॥१०॥
राधास्वामी दृष्टि करी कर प्यारा।
लीनी सुरत चरन में जोड़ ॥११॥

॥ शब्द ९१ ॥

सुरतिया पकड़ गुरू की बांह।
उमंग कर निज घर को जाती ॥ १ ॥
समझ सोच गुरू बचन अमोला।
होय गई धुन रस माती ॥ २ ॥

नित अभ्यास करत अब घट में ।
मन इन्द्री को ले साथी ॥ ३ ॥
गुरु का रूप अधिक मन भाया ।
ध्यान धरत हिये दिन राती ॥ ४ ॥
करम धरम और भरम अनेका ।
इन सब की अब हुई घाती ॥ ५ ॥
सहसकंवल होय चढ़ी गगन में ।
गुरु दरशन रस हुई राती ॥ ६ ॥
माया काल लगाईं अटकें ।
गुरु बल मार धरे लाती ॥ ७ ॥
प्रेम भरे राग और रागिनी ।
सुन में हंसन संग गाती ॥ ८ ॥
महासुन्न के पार गुफा में ।
सोहंग मुरली बजवाती ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष संग आरत करती ।
मधुर बीन धुन सुनवाती ॥१०॥
राधास्वामी दीन दयाला ।
चरन सरन की दई दाती ॥११॥

॥ शब्द ८२ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
गुरु दई प्रेम की दात ॥ १ ॥
दया हुई गुरु सन्मुख आई ।
उन धरा मेहर का हाथ ॥ २ ॥
संत मते की महिमां जानी ।
सतसंग कर दिन रात ॥ ३ ॥
दया मेहर से बचन सुनाये ।
परख परख समझी गुरु बात ॥ ४ ॥
चरन सरन गुरु हिरदे धारी ।
टूट गया अब जम से नात ॥ ५ ॥
सुरत शब्द मारग ले सारा ।
करती शब्द बिख्यात ॥ ६ ॥
धुन रस पाय सुरत अब जागी ।
दूर हुए मन के उतपात ॥ ७ ॥
करम भरम सब दीन नसाईं ।
काल बली की निरखी घात ॥ ८ ॥

चढ़ी सुरत, पहुंची नभपुर में ।
गगन मंडल गुरु दरशन पात ॥ ९ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफा लख ।
सत्तलोक धुन बीन सुनात ॥१०॥
अलख अगम का दरशन करके ।
राधास्वामी चरन समात ॥११॥

॥ शब्द ९३ ॥

सुरतिया गाय रही ।
गुरु महिमां सार ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
चरन सरन रही हिरदे धार ॥ २ ॥
उमंग सहित सेवा को धावत ।
हरख रही गुरु रूप निहार ॥ ३ ॥
प्रेम सहित सुनती धुन अनहद ।
निरख रही घट मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
द्वारा फोड़ चढ़त नभ ऊपर ।
घंटा संख सुना धर प्यार ॥ ५ ॥

गुरु पद पाय सुन्न में धाई ।
गुरु संग गई महासुन पार ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन बीन बजावत ।
भेंटी जाय सत्त करतार ॥ ७ ॥
अलख अगम के पार हुई जब ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥ ८ ॥
प्रेम उमंग नवीन जगावत ।
आरत गावत सन्मुख ठाड़ ॥ ९ ॥
मेहर दया सतगुरु की पाई ।
खुल गया अब भक्ती भंडार ॥१०॥
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।
गावत रहूं अब लैलो* निहार* ॥११॥

॥ शब्द ९४ ॥

सुरतिया भींज रही ।
गुरु प्रेम रंग बरसाय ॥ १ ॥
मगन होय धरती गुरु ध्याना ।
घट में दरशन पाय ॥ २ ॥

* लैलो निहार = रात दिन

अचरज रूप दिखाया गुरु ने।
सोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ३ ॥
उमँग उमँग चरनन में लागी।
दिन दिन प्रेम प्रीत अधिकाय ॥ ४ ॥
शब्द सुनत अब चढ़त अधर में।
नभ में जोत रूप दरसाय ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत।
सुन्न में चढ़ निरमल गत पाय ॥ ६ ॥
भंवरगुफा मुरली धुन सुन कर।
सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ७ ॥
अचरज दरस पुरुष का पाया।
मेहर से दई धुन बीन सुनाय ॥ ८ ॥
अलख पुरुष दरबार निरख कर।
अगम लोक में पहुँची धाय ॥ ९ ॥
धाम अनामी अपर अपारा।
वहां आरती प्रेम सजाय ॥१०॥
राधास्वामी के चरनन लागी।
अचरज सोभा क्या कहूं गाय ॥११॥

॥ शब्द ९५ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
हित चित से सतगुरु बैन ॥ १ ॥
मगन होय गुरु दरशन लागी ।
ताकत रही गुरु ऐन* ॥ २ ॥
चित हुआ साफ़ बुद्धि हुई निरमल ।
परखी घट की सैन ॥ ३ ॥
मन और सुरत लगे घट जुड़ने ।
धर गुरु ध्यान रूप रस लेन ॥ ४ ॥
प्रीत बढ़त परतीत सम्हारत ।
गुरु के पास बसत दिन रैन ॥ ५ ॥
बिन गुरु दरस बिकल रहे मन में ।
सतसंगत में पावत चैन ॥ ६ ॥
करम भरम से हुई अब न्यारी ।
काल से छूटा लेन और देन ॥ ७ ॥
दीन जान गुरु दया बिचारी ।

* ऐन = नेत्र

लोक लाज की कान न लावे ।
हाज़िर रहे दरबार ॥ ४ ॥
कोइ कुछ कहवे मन नहिं लावे ।
दीन अधीन पड़ी गुरु द्वार ॥ ५ ॥
करम भरम तज सरन सम्हारी ।
मन में निश्चय धार ॥ ६ ॥
सतसँग में मन चित हुलसाना ।
सुनत बचन गुरु सार ॥ ७ ॥
शब्द मांहि नित सुरत लगावत ।
सुन अनहद भनकार ॥ ८ ॥
हिरदे में गुरु रूप बसावत ।
ध्यान धरत हर बार ॥ ९ ॥
सुमिरन नाम करे निस बासर ।
राधास्वामी टेक अधार ॥१०॥
जगे भाग गुरु दरशन पाये ।
काल से तोड़ा नाता भाड़ ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला ।
सहज किया भौसागर पार ॥१२॥

सुरत चली अब घट में पैन ॥ ८ ॥
नभ में लखा जोत उजियारा।
त्रिकुटी जाय सुनी गुरु कहेन ॥ ९ ॥
धुन की ख़बर लेत चली आगे।
सुन्न में जाय खुले हिये नैन ॥१०॥
सतपुर होय गई धुर धामा।
निरखा अचरज रूप अनैन ॥११॥
मोहिं निकाम नीच को छिन में।
राधास्वामी मेहर से कीना महन* ॥१२॥

॥ शब्द ९६ ॥

सुरतिया सेव रही।
गुरु चरन सम्हार ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिये माहिं बढ़ावत।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥
सेवा करत उमँग से निस दिन।
मन नहिं लावे आर ॥ ३ ॥

* महन = बड़ा

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया चटक चली ।
सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
दीन चित्त होय सन्मुख आई ।
कीना गुरु से प्यार ॥ २ ॥
बिरह भाव बैराग हिये धर ।
बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥
दया धार गुरु जुगत बताई ।
करनी करत सम्हार ॥ ४ ॥
उलट पलट घट अंतर लागी ।
तज काल अंग बीकार ॥ ५ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
निरखा जोत उजार ॥ ६ ॥
मन हुआ लीन चरन में गुरु के ।
लख रही त्रिकुटी लीला सार ॥ ७ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
बाज रही जहां सारँग सार ॥ ८ ॥

भंवरगुफा होय सतपुर पहुंची ।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ९ ॥
अलख लोक में सुरत सुधारी ।
अगम लोक चढ़ किया सिंगार ॥१०॥
पुहप सिंघासन स्वामी बिराजे ।
अचरज सोभा धार ॥११॥
दरशन कर अति कर हरखानी ।
राधास्वामी चरन गहे निज सार ॥१२॥

॥ शब्द ९८ ॥

सुरतिया हरख रही ।
गुरु देख जमाल ॥ १ ॥
बिरह भाव ले सन्मुख आई ।
मगन हुई सुन बचन रसाल ॥ २ ॥
समझ समझ गुरु बात अमोला ।
त्याग दिये सब माया ख्याल ॥ ३ ॥
भोगन से इन्द्रियन को रोकत ।
निरखत रही नित मन की चाल ॥ ४ ॥

गुरु सरूप का ध्यान हिये धर।
तोड़ दिया बल काल कराल ॥ ५ ॥
लोभ मोह और मान ईरखा।
दूर हटाये बिरह सम्हाल ॥ ६ ॥
रोक टोक अब करे न कोई।
काम क्रोध नहिं डारत पाल ॥ ७ ॥
बाट छोड़ माया थक बैठी।
अब नहिं डारत अपना जाल ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सुरत हुइ निर्मल।
चढ़त अधर घर हाल ॥ ९ ॥
नभ चढ़ सुरत गगन को धाई।
सुन्न सिखर गई सतगुरु नाल ॥१०॥
भंवरगुफा होय सतपुर पहुँची।
अलख अगम लख हुई खुशहाल ॥११॥
राधास्वामी दरस निहारा।
चरन सरन गह हुई निहाल ॥१२॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया नाच रही।
चढ़ गगन शब्द सुन तान ॥ १ ॥
उमँग उमँग गुरु दरशन करती।
त्यागा मन का मान ॥ २ ॥
सुन सुन धुन फिर आगे चाली।
हंसन संग मिली अब आन ॥ ३ ॥
हरख हरख सब हंस हंसिनी।
गावत गुन सतगुरु धर ध्यान ॥ ४ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा।
सुनत रही मुरली धुन कान ॥ ५ ॥
पहुँची जाय पुरुष दरबारा।
पाय गई सत शब्द निशान ॥ ६ ॥
अलख अगम के चरन परस कर।
पहुँची धुर अस्थान ॥ ७ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी।
प्रेम भक्ति मोहिं दीना दान ॥ ८ ॥

दीन अधीन पड़ी चरनन में ।
चरन सरन दृढ़ कीनी आन ॥ ९ ॥
प्रेम सहित उन आरत गाती ।
वार धराती जान और प्रान ॥१०॥
महिमा राधास्वामी अति से भारी ।
क्योंकर करूं बखान ॥११॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला ।
दीना चरन ठिकान ॥१२॥

॥ शब्द १०० ॥

सुरतिया झूम रही ।
अब पिया अमी रस नाम ॥ १ ॥
तन मन की सब सुध बिसरानी ।
दिया गुरू अस जाम ॥ २ ॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धाई ।
पाया जोत मुक़ाम ॥ ३ ॥
घंटा संख दोउ धुन छोड़ी ।
चढ़ गई त्रिकुटी बाम ॥ ४ ॥

मगन हुई गुरु दरशन पाए ।
हारे काल और जाम ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हाई ।
हंसन संग किया बिसराम ॥ ६ ॥
वहां से चली अधर को प्यारी ।
भंवरगुफा मुरली धुन गाम ॥ ७ ॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में ।
पहुंची सतगुरु धाम ॥ ८ ॥
अलख अगम की धुन सुन धाई ।
कीना पूरा काम ॥ ९ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी ।
पाया अब निज ठाम ॥१०॥
दीन लीन होय आरत गाती ।
पाई सीतल छाम ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला ।
चरनन में दीना आराम ॥१२॥

॥ शब्द १०१ ॥

सुरतिया घूम गई।
तज जगत भाव भै प्यार ॥ १ ॥
सतसंग कर निरमल बुध जागी।
देखा जगत असार ॥ २ ॥
कुमत उड़ाय सुमत अब धारी।
तज दिये मन के सभी बिकार ॥ ३ ॥
संत मता अति पूरा सांचा।
धुर पहुंचावन हार ॥ ४ ॥
सुन गुरु बचन समझ अस महिमा।
मन से उसको लीना धार ॥ ५ ॥
उमंग सहित गुरु सेवा लागी।
नित्त बढ़ावत चरनन प्यार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द मारग निज सारा।
गुरु से पाया भेद अपार ॥ ७ ॥
प्रीत सहित अभ्यास करूं नित।
चाखत रहूं शब्द रस सार ॥ ८ ॥

उलट पलट अब चढ़ी गगन पर ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ९ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
धुन मुरली और बीन सम्हार ॥१०॥
निरख दरस गुरु अलख अगम का ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥११॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी प्यारे ।
चरन सरन दी दया बिचार ॥१२॥

॥ शब्द १०२ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
धर शब्द गुरू सँग प्यार ॥ १ ॥
भाव भक्ति से चरन परसती ।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
उलट दृष्टि गुरु दरशन करती ।
तन मन सुरत बिसार ॥ ३ ॥
प्रेम भरी सुख आरत गाती ।
चरनन पर जाती बलिहार ॥ ४ ॥

गुरु दयाल मोहिं निरख अधीना।
लीना भुजा पसार ॥ ५ ॥
चरन सरन मोहिं निज कर दीनी।
काल करम को डाला वार ॥ ६ ॥
क्योंकर गुन राधास्वामी गाऊं।
उन बिन नहिं मोहिं और अधार ॥ ७ ॥
इत से घूम निरखती घट में।
गुरु का अद्‌भुत रूप अपार ॥ ८ ॥
मचल मचल चरनन लिपटानी।
झूम रही पी अमृत सार ॥ ९ ॥
जग जिव भाव हटाया गुरु ने।
दीना निरमल जीवन सार ॥१०॥
अटक भटक तज पकड़े चरना।
राधास्वामी हुए मेरे प्रिय भरतार ॥११॥
पति और पिता उन्हीं को जानूं।
रहूं निस दिन उन मौज अधार ॥१२॥

॥ शब्द १०३ ॥

सुरतिया रंग भरी।
गुरु सन्मुख उमगत आय ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ावत।
चरनन रही लिपटाय ॥ २ ॥
साज संवार करत गुरु भक्ती।
नित नई प्रेम रीत दरसाय ॥ ३ ॥
मन इंद्रियन से जूझ जूझ कर।
लेती खूंट छुड़ाय ॥ ४ ॥
छिन २ जोड़त सुरत शब्द में।
धुन झनकार सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर दया राधास्वामी की परखत।
नित नया आनन्द पाय ॥ ६ ॥
जब तब माया बिघन लगावत।
काल रहे मग में अटकाय ॥ ७ ॥
तबही चित्त उदास होय कर।
गिरत पड़त धुन रस नहिं पाय ॥ ८ ॥

गुरु से करे फ़रियाद घनेरी ।
क्यों नहिं मेरी करो सहाय ॥ ९ ॥
गुरु की दया सदा संग रहती ।
मसलहत उनकी बूझ न पाय ॥१०॥
अटक भटक जो मग में भेंटत ।
देत नई बिरह उमंग जगाय ॥११॥
याते धर बिस्वास हिये में ।
सूरत मन नित अधर चढ़ाय ॥१२॥
राधास्वामी मेहर दया से अपने ।
पूरा काज बनाय ॥१३॥
मैं अति दीन निबल निर आसर ।
आन पड़ा उनकी सरनाय ॥ १४ ॥
प्रेम सहित नित आरत करके ।
राधास्वामी लेउं रिझाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द १०४ ॥

सुरतिया मस्त हुई ।
अब पाया दरश गुरु आय ॥ १ ॥

सुन सुन धुन तिल फोड़ सिधारी ।
नभ में पहुंची धाय ॥ २ ॥
घंटा संख अति धूम मचाई ।
दरशन जोत दिखाय ॥ ३ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी आई ।
गरज मृदंग सुनाय ॥ ४ ॥
गुरु का रूप लखा हिये अंतर ।
अद्भुत सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
अक्षर रूप लखा सुन माहीं ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाय ॥ ६ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा ।
भंवरगुफा मुरली धुन गाय ॥ ७ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।
मधुर मधुर धुन बीन बजाय ॥ ८ ॥
अलख अगम का रूप अनूपा ।
लख हिये प्रेम अधिक रहा छाय ॥ ९ ॥
अचरज धाम निरखती चाली ।
राधास्वामी चरन रही लिपटाय ॥ १० ॥

प्रेम प्रीत से आरत साजी ।
राधास्वामी लिए रिझाय ॥११॥
प्रेम आनंद मिला अति भारी ।
अब किस को मैं कहूं सुनाय ॥१२॥
अजब धाम पाया मैं सजनी ।
महिमा ताकी कही न जाय ॥१३॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
लीना मुझ को अंग लगाय ॥१४॥
छिन छिन गुन गाऊं गुरु प्यारे ।
पल पल राधास्वामी रहो धियाय ॥१५॥

॥ शब्द १०५ ॥

सुरतिया मगन भई ।
गुरु देख दीदार ॥ १ ॥
बचन बान गुरु तान चलाये ।
सुन सुन हुई सरशार ॥ २ ॥
हरख हरख गुरु सतसंग करती ।
भूल गई संसार ॥ ३ ॥

प्रेम बढ़ा दिन दिन गुरु चरनन ।
तन मन धन सब दीना वार ॥ ४ ॥
गुरु का रूप अनूप हिये में ।
निरख रही छिन छिन कर प्यार ॥ ५ ॥
आठ जाम सुत रहे रंगीली ।
प्रेम प्रीत का कर सिंगार ॥ ६ ॥
नींद भूख आलस सब छोड़ा ।
चढ़ा रहे नित प्रेम खुमार ॥ ७ ॥
गुरु के रंग रंगी सुत रंगीं ।
त्याग दिया सब जग ब्योहार ॥ ८ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपना ।
माया काल रहे दोउ हार ॥ ९ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
सुनत रही अनहद झनकार ॥१०॥
सुन सुन धुन पहुंची नभपुर में ।
बंकनाल धस त्रिकुटी पार ॥११॥
सुन्न के परे महासुन धाई ।
भंवरगुफा सतलोक निहार ॥१२॥

अलख अगम के पार ठिकाना ।
पाया राधास्वामी चरन अधार ॥१३॥
प्रेम प्रीत से आरत साजी ।
गाय रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥१४॥
चरन सरन दे गोद बिठाया ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥१५॥

॥ शब्द १०६ ॥

सुरतिया गाज रही ।
चढ़ शब्द गुरू के संग ॥ १ ॥
बिरह बिमल अनुराग चित्त धर ।
धारा सतगुरु रंग ॥ २ ॥
राधास्वामी मेहर परख अंतर में ।
प्रीत बसी अंग अंग ॥ ३ ॥
दरशन कर तन मन सुध भूली ।
जैसे दीप पतंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी बल ले चढ़त गगन पर ।
देख काल रहा दंग ॥ ५ ॥

शब्द शोर मच रहा गगन में ।
बह रही धारा गंग ॥ ६ ॥
काम क्रोध अहंकार लोभ सब ।
हुए आपही तंग ॥ ७ ॥
छोड़ गये घर घाट पुराना ।
मन भी हुआ अपंग ॥ ८ ॥
माया ममता दूर हटाई ।
छोड़ा नाम और नंग ॥ ९ ॥
सील सुमत आय थाना कीना ।
सीखी सतगुरु ढंग ॥१०॥
निरभय होय सुन्न में खेलूं ।
होगई आज निसंक ॥११॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में ।
पहुंची जैसे बिहंग ॥१२॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
सब से हुई असंग ॥१३॥
दीन अधीन पड़ी चरनन में ।
गुरु ने लगाया अपने अंग ॥१४॥

राधास्वामी अचरज दरशन पाये ।
धारा रंग सुरंग ॥१५॥

॥ शब्द १०७ ॥

सुरतिया लाग रही ।
गुरु चरन अधार ॥ १ ॥
सुन सुन महिमा संत मते की ।
भाव बढ़ा और जागा प्यार ॥ २ ॥
औसर पाय मिला साधू संग ।
पाया भेद अपार ॥ ३ ॥
उमंग उमंग करती नित साधन ।
सुनती धुन झनकार ॥ ४ ॥
प्रेम बढ़ा चरनन में गुरु के ।
खोजत आई गुरु दरबार ॥ ५ ॥
दरशन पाय हुई मस्तानी ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ६ ॥
दया करी सतसंग में मेला ।
गुरु ने बचन सुनाये सार ॥ ७ ॥

परमारथ की क़दर जनाई ।
देखा जगत असार ॥ ८ ॥
दिन दिन प्रीत बढ़त गुरु चरना ।
उमंग उठत हिये में हर बार ॥ ९ ॥
सेवा करके गुरू रिझाऊं ।
पाऊं राधास्वामी दया अपार ॥१०॥
करम भरम सब दूर बहाये ।
पकड़े राधास्वामी चरन सम्हार ॥११॥
सुरत चढ़ी नभ में अब दौड़ी ।
गगन जाय सुनी धुन ओंकार ॥१२॥
सुन और महासुन्न के पारा ।
भंवरगुफा मुरली झनकार ॥१३॥
सत्त रूप और अलख अगम लख ।
गई सुरत अब निज घरबार ॥१४॥
मेहर करी निज भाग जगाया ।
राधास्वामी कीना सहज उद्धार ॥१५॥

॥ शब्द १०८ ॥

सुरतिया प्रेम भरी ।
रही सतगुरु हिरदे छाय ॥ १ ॥
बाल समान गोद गुरु खेलत ।
हिये दृढ़ सरन बसाय ॥ २ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे ।
चित में नित्त रहै हरखाय ॥ ३ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
आस बास गुरु चरनन लाय ॥ ४ ॥
ऐसी निरमल भक्ति कमावत ।
उमंग उमंग सेवा को धाय ॥ ५ ॥
बचन गुरू सुन बिगसत मन में ।
नई नई प्रीत जगाय ॥ ६ ॥
चरनन में नित सरधा बढ़ती ।
महिमा चित में अधिक समाय ॥ ७ ॥
सुमिरन ध्यान भजन की जुगती ।
ले गुरु से रहूं नित्त कमाय ॥ ८ ॥

मन रहे दीन लीन चरनन में ।
सुरत शब्द संग अधर चढ़ाय ॥ ९ ॥
सहसकंवल धुन घंटा सुनती ।
जोत रूप दरसाय ॥१०॥
गगन जाय निरखत गुरु मूरत ।
धुन मिरदंग और गरज सुनाय ॥११॥
राग रागिनी गावत सुन में ।
धुन किंगरी सारंग बजाय ॥१२॥
सेत सूर लख भंवर प्रकाशा ।
मुरली संग सोहंग धुन गाय ॥१३॥
दरस पुरुष का पाय अमरपुर ।
अलख अगम को निरखा जाय ॥१४॥
राधास्वामी किया सब काज मेहर से ।
उनके चरन से रही लिपटाय ॥१५॥

॥ शब्द १०९ ॥

सुरतिया उमंग भरी ।
रही गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥

दया धार गुरु चरन पधारे।
अचरज भाग जगाय ॥ २ ॥
नित प्रति दरशन गुरु का करती।
चरनामृत परशादी खाय ॥ ३ ॥
मैं तो नीच निकाम नकारा।
चरन सरन दई मोहिं अपनाय ॥ ४ ॥
औगुन मेरे कुछ न बिचारे।
दिन दिन मेहर करी अधिकाय ॥ ५ ॥
दीन और हीन चीन्ह मोहिं सतगुरु।
लीना अपनी गोद बिठाय ॥ ६ ॥
बिन करनी गुरु मेहर दया से।
मन और सुरत दीन सिमटाय ॥ ७ ॥
अंतर में नित करत चढ़ाई।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ८ ॥
घट में देखूं अजब तमाशा।
परमारथ में लाग बढ़ाय ॥ ९ ॥
मगन होय नित भाग सराहूं।
अचरज लीला देख हरखाय ॥ १० ॥

निज्त बिलास होत घर मेरे ।

सतसंग दिन दिन बढ़ता जाय ॥११॥

किरपा कर संजोग मिलाया ।

अस बड़ भाग कोइ बिरला पाय ॥१२॥

बिना मांग गुरु किरत करावें ।

बिन याचे दई न्यामत आय ॥१३॥

क्योंकर शुकराना करूं उनका ।

मैं गुरु बिन कोइ और न ध्याय ॥१४॥

आरत कर राधास्वामी रिझाऊं ।

राधास्वामी २ रहूं नित गाय ॥१५॥

॥ शब्द ११० ॥

सुरतिया भाव भरी ।

आज गुरु संग करत बिलास ॥ १ ॥

अमी रूप गुरु बचन अमोला ।

सुनत चित्त दे पास ॥ २ ॥

समझ समझ कर मानत उनको ।

धर चरनन बिस्वास ॥ ३ ॥

सुरत शब्द की करत कमाई।
निस दिन बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
गुरु चरनन बिन और न कोई।
धारत हिये में आस ॥ ५ ॥
भक्ति दीनता प्रेम बढ़ावत।
करती चरन निवास ॥ ६ ॥
गुरु सरूप को ध्यान लाय कर।
हिये में करती बास ॥ ७ ॥
उमंग उठी सेवा की घट में।
होगई दासन दास ॥ ८ ॥
निस दिन सेव रही गुरु चरना।
चित से रहती उनके पास ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम जपत निस बासर।
जग से रहती चित्त उदास ॥१०॥
राधास्वामी चरन पकड़ कर बैठी।
मिल गई प्रेम सरन की रास ॥११॥
दया हुई सुत चढ़ी अधर में।
सहसकंवल दल किया निवास ॥१२॥

वहां से चल त्रिकुटी में पहुंची ।
निरखा लाल सूर परकाश ॥१३॥
सुन में जाय किये अश्नाना ।
देखा अक्षर पुरुष उजास ॥१४॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई ।
बीन बजे जहां वहां निस बास ॥१५॥
लखा जाय फिर अलख अगम को ।
राधास्वामी चरनन कीना बास ॥१६॥
प्रेम सहित वहां आरत साधी ।
हो गई राधास्वामी चरनन दास ॥१७॥

॥ शब्द १११ ॥

सुरतिया मोह रही ।
आज निरख गुरू छबि शान ॥ १ ॥
नित्त बिलास होत गुरु द्वारे ।
देख देख मैं रहूं हैरान ॥ २ ॥
मेहर दया जस मुझ पर कीनी ।
क्योंकर उसका करूं बखान ॥ ३ ॥

मात पिता मेरे राधास्वामी प्यारे।
दया धार जग प्रगटे आन ॥ ४ ॥
बालक सम मोहिं गोद बिठाया।
प्रेम भक्ति मोहिं दीनी दान ॥ ५ ॥
जो कुछ मांगा सो मैं पाया।
क्योंकर करूं शुकराना आन ॥ ६ ॥
सहज मिले मोहिं दुरलभ देवा।
तन मन उन पर करूं कुरबान ॥ ७ ॥
राधास्वामी सम कोइ और न जानूं।
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥ ८ ॥
वाह वाह मेरे सतगुरु दाता।
वाह वाह प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥
जीव दया कारन जग आये।
देव सब जीवन भक्ती दान ॥१०॥
मुझ पर दया करो अब ऐसी।
घट में दीजे शब्द निशान ॥११॥
मन और सूरत चढ़ें अधर में।
सुनें जाय त्रिकुटी धुन तान ॥१२॥

आरत धार गुरू चरनन में ।
वहां से चढ़ाऊ अधर ठिकान ॥१३॥
सतपुर जाय करूं फिर आरत ।
सत्तपुरुष के सन्मुख आन ॥१४॥
वहां से राधास्वामी धाम सिधारूं ।
राधास्वामी चरन लगाऊं ध्यान ॥१५॥
उमंग प्रेम से आरत गाती ।
पाय गई अब प्रेम निधान ॥१६॥
कैसे भाग सराहूं अपना ।
राधास्वामी प्यारे चरन समान ॥१७॥

॥ शब्द ११२ ॥

सुरतिया मौन रही ।
गुरू दिया शब्द रस सार ॥ १ ॥
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आई ।
हिये परतीत संवार ॥ २ ॥
सरधा सहित सुनत गुरु बचना ।
सतसंग में धर प्यार ॥ ३ ॥

उमंग बढ़त दिन दिन हिरदे में ।
सेवा करत सम्हार ॥ ४ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा ।
तजत न कीनी बार ॥ ५ ॥
कुल कुटम्ब से नाता तोड़ा ।
तज मन का अहंकार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का भेद नियारा ।
गुरु से पाया सार ॥ ७ ॥
मन इंद्री से जूझत निस दिन ।
त्यागे सबही बिकार ॥ ८ ॥
भजन भक्ति अभ्यास करत नित ।
झांकत मोक्ष दुआर ॥ ९ ॥
सतगुरु दया मेहर संग लेकर ।
अधर चढ़त मन बिरह सम्हार ॥१०॥
नभ में लखा जोत उजियारा ।
गगन जाय गुरु रूप निहार ॥११॥
सुन में जाय सरोवर न्हाई ।
गुरु मिल गई महासुन पार ॥१२॥

भंवरगुफा का लखा उजाला ।
सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥१३॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
पहुंची राधास्वामी धाम अपार ॥१४॥
पिता प्यारे मेरे हुए दयाला ।
अंग लगाया मोहिं कर प्यार ॥१५॥
मिल गया आज प्रेम भंडारा ।
परम आनंद अनंत अपार ॥१६॥
पूरन भाग उदय हुए मेरे ।
मिल गये राधास्वामी निज दिलदार ॥१७॥

॥ शब्द ११३ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
धर सतगुरु रूप धियान ॥ १ ॥
भाव सम्हार संग गुरु कीना ।
सुने बचन निज आन ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा ।
सुरत शब्द का पाया ज्ञान ॥ ३ ॥

ले उपदेश किया अभ्यासा ।

संतगुरु रूप करी पहिचान ॥ ४ ॥

प्रेम भक्ति हिरदे में जागी ।

गुरु चरनन में रही लिपटान ॥ ५ ॥

दरशन करत ताक गुरु नैना ।

बचन सुनत चढ़ अधर ठिकान ॥ ६ ॥

पियत सार रस हुई मतवाली ।

झूठा लगा जहान ॥ ७ ॥

सतगुरु रंग रँगी सुत बिरहन ।

मन माया दोउ वार रहान ॥ ८ ॥

नित्त बिलास करे घट अंतर ।

सहज सहज सुत अधर चढ़ान ॥ ९ ॥

सतगुरु रूप संग ले चालत ।

काल करम की कुछ न बसान ॥१०॥

दरशन पाय रहत मगनानी ।

वारत तन मन जान और प्रान ॥११॥

सतगुरु रूप लगा अति प्यारा ।

जस कामी को कामिन जान ॥१२॥

मीन रहे जस जल आधारा ।
पपिहा को जस स्वांत समान ॥१३॥
ऐसी प्रीत बढ़ी गुरु चरनन ।
को उसका कर सके बखान ॥१४॥
मन और सुरत चढ़े गगनापुर ।
वहां से सतपुर जाय बसान ॥१५॥
सत्तपुरुष से ले दुरबीना ।
धाम अनामी पहुँची आन ॥१६॥
मगन हुई निज घर में आई ।
राधास्वामी दरस पाय त्रिप्तान ॥१७॥

॥ शब्द ११४ ॥

सुरतिया ताक रही ।
गुरु नैन रसाल ॥ १ ॥
घेर घुमर घट भीतर आई ।
पियत अधर रस हाल ॥ २ ॥
बिसर गई सब सुध बुध तन की ।
दूर हुए मेरे सब दुख साल ॥ ३ ॥

काल लगाये बिघन अनेका ।
सन्मुख हुई ले नाम की ढाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काल बल तोड़ा ।
मन इंद्री का काटा जाल ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा ।
लोभ मोह भी हुए पामाल ॥ ६ ॥
बिन गुरु दया भरमती जग में ।
राधास्वामी लिया मोहिं आप सम्हाल ॥ ७ ॥
निरमल होय अधर को चाली ।
निरखा अद्भुत जोत जमाल ॥ ८ ॥
घंटा संख छोड़ धुन नभ में ।
आगे धसी बंक की नाल ॥ ९ ॥
त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया ।
सुन में न्हाय मानसर ताल ॥१०॥
लीला अक्षर पुरुष निरख कर ।
महासुन्न गई सतगुरु नाल ॥११॥
मुरली धुन सुन भंवरगुफा में ।
महाकाल को दिया खिलाल ॥१२॥

सतपुर जाय दरस पुर्ष पाया ।

धुन बीना सुन हुई खुशहाल ॥१३॥

अलख अगम के चढ़ गई पारा ।

मिल गये राधास्वामी दीन दयाल ॥१४॥

उमंग सम्हार आरती धारी ।

मगन हुई अब पाय विसाल ॥१५॥

मेहर दया से अंग लगाया ।

होय गई मैं आज निहाल ॥१६॥

हर दम गुन गाऊं पिया प्यारे ।

कर दिया मुझको मालामाल ॥१७॥

॥ शब्द ११५ ॥

सुरतिया जाग उठी ।

सुन बचन गुरू के सार ॥ १ ॥

भरमत रही जगत अँधियारी ।

मिला न सच्चा संग ॥ २ ॥

भाग जगे गुरु सन्मुख आई ।

पाया भेद अपार ॥ ३ ॥

मन और सूरत जुड़ मिल आये ।
धर चरनन में प्यार ॥ ४ ॥
काल करम बहु बिघन लगाये ।
पड़ा संगत से दूर ॥ ५ ॥
मेहर हुई बढ़ी उमंग नवीनी ।
आया चरन हज़ूर ॥ ६ ॥
मेहर की दृष्ट करी सतगुरु ने ।
दई प्रेम की दात ॥ ७ ॥
उमंग उमंग गुरु सेवा करती ।
नित नया भाव जगाय ॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द धुन सुनती ।
नित्त नया रस पाय ॥ ९ ॥
रैन दिवस चरनन में रहती ।
नित नया आनंद पाय ॥१०॥
नित नई प्रीत जगत गुरु चरनन ।
बरनन करी न जाय ॥११॥
धुन रस पाय हुई मतवारी ।
सुरत गगन को धाय ॥१२॥

सहसकंवल लख जोत उजारा ।
त्रिकुटी गुरू का धाम ॥१३॥
चंद्र चांदनी चौक निहारा ।
भंवरगुफा सत नूर ॥१४॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर ।
पाया अजब सरूर ॥१५॥
तिस के परे अलख दर्स पाया ।
अगम को परसा धाय ॥१६॥
हैरत धाम लखा तिस ऊपर ।
सोभा कही न जाय ॥१७॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
अचरज दरशन पाय ॥१८॥
भर भर प्रेम आरती गाती ।
चरन स[illegible]न लिपटाय ॥१९॥
मेहर करी गुरु परम सनेही ।
लीना गोद बिठाय ॥२०॥
हरख हरख मैं नित गुन गाऊं ।
राधास्वामी सदा धियाय ॥२१॥

॥ शब्द ११६ ॥

सुरतिया मनन करत ।
सतगुरु के अचरज बोल ॥ १ ॥
जो जो बचन सुनत सतसंग में ।
सब की करती तोल ॥ २ ॥
सार निकार हिये बिच धारा ।
सुरत शब्द मारग अनमोल ॥ ३ ॥
चढ़त अधर में निरख उधर में ।
छांट रही घट धुन की रोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी जैसी दिखाई लीला ।
कासे कहूं मैं उसकी खोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११७ ॥

सुरतिया सोय रही ।
मन इंद्रियन संग जग माहिं ॥ १ ॥
जगा भाग सतगुरु से भेंटी ।
दृढ़ कर पकड़ी उनकी बांह ॥ २ ॥

दया करी घर भेद सुनाया ।
बैठी चरन सरन की छांह ॥ ३ ॥
मोह नींद से अब उठ जागी ।
मिट गई काल करम की दायं ॥ ४ ॥
राधास्वामी सब बिध काज संवारा ।
अब नहिं छोड़ूं उनकी बांह ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११८ ॥

सुरतिया खेल रही ।
गुरु बागन बीच ॥ १ ॥
कंवलन की फुलवार खिलानी ।
मन माली रहा सींच ॥ २ ॥
लख लख कंवल बिगस ज्यों कलियां ।
सुरत अधर को खींच ॥ ३ ॥
भोग बासना दूर हटाई ।
मन इंद्री को डाला भींच ॥ ४ ॥
बिघन अनेक मेहर से टारे ।
काल करम को दीनी मींच ॥ ५ ॥

अपना जान दया स्वामी कीनी ।

सुरत चरन में लीनी इंच ॥ ६ ॥

राधास्वामी लिया उबार दया कर ।

मोहिं अधम नालायक़ नीच ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११९ ॥

सुरतिया चरन गहे ।

सुन सतगुरु बचन अमोल ॥ १ ॥

धर अनुराग लिया उपदेशा ।

कर रही सुरत शब्द की तोल ॥ २ ॥

प्रेम सहित घट धुन में लागी ।

पहुंची जाय ब्रह्म के कोल ॥ ३ ॥

वहां से पार ब्रह्म अस्थाना ।

लखा जाय और हुई अनमोल ॥ ४ ॥

माया के सब जाल उठाये ।

भाग गया अब काल का गोल ॥ ५ ॥

सत्त शब्द धुन चढ़ कर पाई ।

कौन करे अब वाका मोल ॥ ६ ॥

राधास्वामी धाम भाग से पाया ।
परमानंद मिला जहां चोल ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२० ॥

सुरतिया भूल गई ।
अब निज घर जग में आय ॥ १ ॥
जनम जनम पड़ी काल के घेरा ।
माया संग लिपटाय ॥ २ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
जग में प्रगटे आय ॥ ३ ॥
मेहर दया से भेद सुनाया ।
घर जाने की जुगत बताय ॥ ४ ॥
अचरज भाग जगाया मेरा ।
अपना कर मोहिं चरन लगाय ॥ ५ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाऊं ।
इक दिन निज घर पहुंचूं जाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरनन आरत धारूं ।
मगन रहूं नित उन गुन गाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२१ ॥

सुरतिया हरख हरख ।
आज गुरु चरनन लागी ॥ १ ॥
बिरह अनुराग धार अब चित में ।
जगत बासना दई त्यागी ॥ २ ॥
भरम हटावत भूल मिटावत ।
भाव भक्ति घट में जागी ॥ ३ ॥
जग ब्योहार लगा सब कांचा ।
सहज हुआ मन बैरागी ॥ ४ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
सुरत हुई धुन रस रागी ॥ ५ ॥
सतसंग बचन लगें अब प्यारे ।
चरन परस हुई बड़भागी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन हुआ बिस्वासा ।
प्रेम दान उन से मांगी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२२ ॥

सुरतिया मांज रही ।
गुरु घाट नाम संग मन अपना ॥ १ ॥
सतसंग कर सेवा को धावत ।
शुद्ध करत अस तन अपना ॥ २ ॥
गुरु भक्तन से प्यार बढ़ावत ।
ख़रच करत अब धन अपना ॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप धर ध्यान हिये में ।
दूर हटावत जग तपना ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन ।
जगत भाव दिन २ घटना ॥ ५ ॥
करम भरम और जग ब्योहारा ।
इन में मन अब नहिं फंसना ॥ ६ ॥
धुन संग नित्त सुरत मन जोड़त ।
निस्फल कूप में नहिं पचना ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़त ऊंचे को ।
त्रिकुटी दरस गुरू तकना ॥ ८ ॥

राधास्वामी सरन सम्हारत।
उनके चरन में अब रचना ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२३ ॥

सुरतिया बचन सम्हार।
गुरू की मौज निहार रही ॥ १ ॥
उमंग उमंग सतसंग को धावत।
प्रीत हिंये में धार रही ॥ २ ॥
कर परतीत गुरू चरनन में।
सुरत शब्द मत सार लई ॥ ३ ॥
नित अभ्यास करत धर प्यारा।
मन के बिकार निकार दई ॥ ४ ॥
ध्यान धरत गुरु रूप निहारत।
नई नई उमंग जगाय रही ॥ ५ ॥
शब्द मांहि नित सुरत लगावत।
सुनत मधुर धुन अधर गई ॥ ६ ॥
जोत उजार लखा नभ माहीं।
तिस परे धुन ओंकार गही ॥ ७ ॥

सुन में चंद्र रूप जाय लखिया।
गुफा परे सतलोक रही ॥ ८ ॥
वहां से राधास्वामी धाम सिधारी।
दया मेहर उन पाय रही ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२४ ॥

सुरतिया समझ बूझ।
आज गुरु मत लिया सम्हार ॥ १ ॥
ख़बर पाय सतसंग में आई।
सुन गुरु बचन अमी की धार ॥ २ ॥
मगन होय मन शांती आई।
कर सत मत बीचार ॥ ३ ॥
उमंग उमंग करती गुरु दरशन।
जागत घट में प्यार ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित।
घट में परख शब्द की धार ॥ ५ ॥
दुरमत छोड़ सुमत अब धारी।
करम धरम का उतरा भार ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन प्रीत हुई गहिरी ।
जग जीवन संग छोड़ा झाड़ ॥ ७ ॥
जगत रीत अब मन नहिं भावे ॥
भक्ती रीत रही चित धार ॥ ८ ॥
काल जाल में सब जग फंसिया ।
बिन गुरु कोइ न जावे पार ॥ ९ ॥
मुझ पर मेहर हुई अब धुर की ।
शब्द भेद मोहिं मिलिया सार ॥१०॥
चरन सरन गह हुई निचिंती ।
राधास्वामी लेहैं मोहिं उबार ॥११॥

॥ शब्द १२५ ॥

सुरतिया न्हाय रही ।
हंसन संग सरवर तीर ॥ १ ॥
न्यारी होय लगी गुरु चरनन ।
छोड़ी जग की भीड़ ॥ २ ॥
सुरत शब्द की कार कमावत ।
धर परतीत बांध मन धीर ॥ ३ ॥

इंद्री भोग लगे अब फीके ।
पियत अमीरस त्यागत नीर ॥ ४ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
मथ २ शब्द निकारत हीर ॥ ५ ॥
चढ़ कर पहुंची त्रिकुटी पारा ।
हंसन संग पियत अब क्षीर ॥ ६ ॥
जिन यह सार भेद घट पाया ।
जग में सच्चा वही फ़क़ीर ॥ ७ ॥
जो तू सैर करै निज घट में ।
राधास्वामी सरन आव मेरे बीर॥ ८ ॥
चरन पकड़ दृढ़ कर तू उनके ।
राधास्वामी से तोहि मिलें न पीर ॥ ९ ॥
दया मेहर से काज बनावें ।
बख़्शें तोहि पद गहिर गँभीर ॥१०॥
निज घर पाय बिलास करै नित ।
फिर जग में नहिं धरै शरीर ॥११॥
राधास्वामी प्यारे मोहिं नीच को ।
प्रेम दात दे किया अमीर ॥१२॥

॥ शब्द १२६ ॥

सुरतिया टेक रही।
गुरु चरनन सीस नवाय ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिरदे धर अपने।
गुरु सेवा में रही चित लाय ॥ २ ॥
उमंग सहित गुरु दरशन करती।
सतसंग बचन सुनत नित आय ॥ ३ ॥
काल करम ने दिया झकोला।
सतसंगत से दूर पराय ॥ ४ ॥
पाय कुसंग बही भोगन में।
मन इंद्री संग रही लिपटाय ॥ ५ ॥
प्रेमी जन से मेल न कीना।
सतगुरु शिक्षा गई भुलाय ॥ ६ ॥
कामादिक में भरमत डोले।
माया के संग रही भुलाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया करी निज अपनी।
जाल काट लिया खैंच बुलाय ॥ ८ ॥

ज़्यों त्यों फिर निरमल कर लीना ।

सतसंग में लिया फेर लगाय ॥ ९ ॥

मनही मन में नित पछतावत ।

करनी कर लई प्रीत जगाय ॥१०॥

होय हुशियार पकड़ दृढ़ चरना ।

राधास्वामी सरन गही अब आय ॥११॥

कर फ़रयाद चरन में गहिरी ।

राधास्वामी दाता लिये मनाय १२॥

होली

॥ शब्द १२७ ॥

सुरतिया धूम मचाय रही ।

खेलन को होली सतगुरु साथ ॥ १ ॥

पिरथम मन माया संग खेली ।

बहु बिध रही जग में भरमात ॥ २ ॥

इंद्रियन के संग हुई दिवानी ।

भोगन में रस पात ॥ ३ ॥

जग की लाज कान मन मानी ।
करम धरम संग रहो फंसात ॥ ४ ॥
गुरु प्रेमी जन आय मिले जब ।
उन सतगुरु का भेद सुनात ॥ ५ ॥
उमंग उठी सुन सुन हिये अंतर ।
तब सतगुरु का खोज लगात ॥ ६ ॥
गुरु चरनन में धावत आई ।
प्रेम रंग भर हिरदे माट ॥ ७ ॥
गुरु से मांगत दोउ कर जोड़ी ।
प्रेम भक्ति का फगुआ दात ॥ ८ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ावत ।
गगन गुरू से जोड़ा नात ॥ ९ ॥
रंग बिरंग खेल वहां होली ।
आरत कर सुर्त अधर चढ़ात ॥१०॥
सत्तपुरुष का निरख दीदारा ।
राधास्वामी चरन समात ॥११॥

॥ शब्द १२८ ॥

सुरतिया रंग भरी।
आज खेलत गुरु संग फाग ॥ १ ॥
मोह नींद में बहुतक सोई।
गुरु मिल आई जाग ॥ २ ॥
दरशन करत सुनत गुरु बैना।
बढ़ा प्रेम अनुराग ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई।
दिन दिन जागा भाग ॥ ४ ॥
चढ़त सुरत घट धुन रस लेती।
करम भरम सब दीने त्याग ॥ ५ ॥
मन हुआ दीन लीन गुरु चरनन।
छूट गया भोगन में राग ॥ ६ ॥
लाल हुई गुरु संग खेल होली।
छूट गये सब कल मल दाग ॥ ७ ॥
गगन जाय अस धूम मचाई।
काल जाल में दीनी आग ॥ ८ ॥

मन माया से खूंट छुड़ा कर ।
जगत मोह का तोड़ा ताग ॥ ९ ॥
सत्त शब्द में सुरत पिरोई ।
ज्यों सूई में धाग ॥१०॥
अलख अगम से फगुआ लेकर ।
राधास्वामी धाम गई मैं भाग ॥११॥
प्रेम रंगीली आरत धारी ।
राधास्वामी चरन रही मैं लाग ॥१२॥

॥ शब्द १२९ ॥

सुरतिया पियत अमीं ।
गुरु नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥
संत मते की सुन सुन महिमां ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सतसंग करत हरखती मन में ।
हिये परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम बसाय हिये में ।
धरत ध्यान गुरु रूप अपार ॥ ४ ॥

भेद पाय मन सुरत लाय कर ।
सुनत शब्द धुन घट में सार ॥ ५ ॥
सरन सम्हारत चरन निहारत ।
मन से काढ़त सभी बिकार ॥ ६ ॥
बिरह जगावत उमंग बढ़ावत ।
जुगत कमावत होय हुशियार ॥ ७ ॥
दिन दिन होत शब्द रस माती ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ८ ॥
राधास्वामी अब निज दया बिचारी ।
सुरत चढ़ाई भौजल पार ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३० ॥

सुरतिया चढ़त अधर ।
धुन डोरी पकड़ सम्हार ॥ १ ॥
सतगुरु दया भेद घट पाया ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ २ ॥
बिरहँ अंग ले करत अभ्यासा ।
सुरत लगाई साज संवार ॥ ३ ॥

मन हुआ मगन चरन गुरु पाये।
सहज तजत रस भोग बिकार ॥ ४ ॥
सुरत हुई धुन रस मतवाली।
घंटा संख सुनत नभ द्वार ॥ ५ ॥
ले गुरु दया गगन पर धाई।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ६ ॥
चंद्र रूप लख महासुन्न पर।
निरखा सेत सूर उजियार ॥ ७ ॥
बीन सुनी अमरापुर जाई।
राधास्वामी चरन परस हुई सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३१ ॥

सुरतिया लखत अधर घर।
गुरु के संग चली ॥ १ ॥
भाव सहित आई सन्मुख गुरु के।
सतसंगत में आन रली ॥ २ ॥
बचन सुनत मन में मगनानी।
कपट छोड़ गुरु संग मिली ॥ ३ ॥

गुरु ने ऊंचा भेद सुनाया ।
बेद कतेब सब रहे तली ॥ ४ ॥
संत देस निज धाम सुरत का ।
पावे जो कोइ शब्द पिली ॥ ५ ॥
उमंग उमंग ले जुगत गुरू से ।
निस दिन करत अभ्यास भली ॥ ६ ॥
सुरत रंगी गुरु प्रेम रंग से ।
निरखत घट में जोत बली ॥ ७ ॥
सुन सुन धुन फिर चालत आगे ।
चढ़ कर पहुंची गगन गली ॥ ८ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफा लख ।
धुन बीना सुन सुरत खिली ॥ ९ ॥
राधास्वामी धाम दिखाना ।
मगन हुई घर पाय अली ॥१०॥

॥ शब्द १३२ ॥

सुरतिया भक्ति करत ।
सतगुरु की दया निहार ॥ १ ॥

हुई निरास हाल जग देखत ।
सोच भरी आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
खोज करत सुख धाम पियारी ।
अमर देस जहां बिमल बहार ॥ ३ ॥
कैसे छूटन होय जगत से ।
कस पावै निज धाम अपार ॥ ४ ॥
देख बिकल मन दरदी सांचा ।
मेहर दृष्टि करी गुरु दयार ॥ ५ ॥
घट का पूरा भेद सुनाया ।
शब्द जुगत समझाई सार ॥ ६ ॥
सुन कर सुरत मगन होय चाली ।
हिये में बिरह अनुराग सम्हार ॥ ७ ॥
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा ।
जोत निरख गई गगन मंझार ॥ ८ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
भंवरगुफा सतलोक निहार ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समानी ।
अभय हुई निज काज सँवार ॥१०॥

॥ शब्द १३३ ॥

सुरतिया उमँग भरी ।
मिली गुरू से खोल कपाट ॥ १ ॥
परमारथ की सार जान कर ।
सतसंग में आई खोजत बाट ॥ २ ॥
सुन सुन बचन पुष्ट हुई मन में ।
जग भय लाज अब चित न समात ॥ ३ ॥
तन मन धन को तुच्छ जान कर ।
गुरू सेवा में ख़रच करात ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित ।
सुरत चढ़ाय अधर रस पात ॥ ५ ॥
नभ को छोड़ गगन में पहुँची ।
गुरु दरशन कर अति हुलसात ॥ ६ ॥
सुन्न और भंवरगुफा के पारा ।
सतगुरू चरनन बल बल जात ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अनूप अपारा ।
निरख मगन हुई महा सुख पात ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३४ ॥

सुरतिया अमन हुई ।
तज चित से जगत कुरंग ॥ १ ॥
जगत संग नित दुख सुख सहती ।
काल करम ने कीना तंग ॥ २ ॥
बचने की कोइ जुगत न सूझे ।
बिकल रहत अँग अंग ॥ ३ ॥
सुन सुन महिमां सतसंगत की ।
गुरु सन्मुख आई धार उमंग ॥ ४ ॥
बचन सुनत मन शांती आई ।
भजन करत चढ़ा प्रेम का रंग ॥ ५ ॥
घट में जाय अधर चढ़ सुनती ।
धुन घंटा और गरज मृदंग ॥ ६ ॥
सुन में होय चली सतपुर को ।
देख काल रहा दंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया अमर घर पाया ।
निरमल हुई कर सतगुरु संग ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३५ ॥

सुरतिया दूर बसे ।
हर दम गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल तोड़ कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सर्ब अंग से गुरु चरनन में ।
लागी धर कर प्यार ॥ ३ ॥
मन की तरंग उचंग सब त्यागी ।
एक आस बिस्वास सम्हार ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मोह रहो सब बिघन निकार ॥ ५ ॥
निज सरूप के दर्शन कारन ।
गुरु चरनन में रही पुकार ॥ ६ ॥
बेकल तड़प उठत हिये मांही ।
नैनन से बहती जल धार ॥ ७ ॥
मौज बिचार सबर नहिं आवत ।
बिरह अगिन भड़कत हर बार ॥ ८ ॥

करूं फ़रियाद दाद नहिं पाऊं।
भारी दुख नहिं जात सहार ॥ ९ ॥
फिर फिर करूं बीनती गहिरी।
हे राधास्वामी पिता दयार ॥१०॥
दर्शन दे काटो दुख मेरा।
मैं अति निरबल पड़ा दुआर ॥११॥
बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे।
धीर न धारे मन बीमार ॥१२॥
टेरत टेरत बहु दिन बीते।
अब तो राधास्वामी सुनो पुकार ॥१३॥
घट में मोहिं निज दर्शन दीजे।
शब्द सुनाओ अमृत धार ॥१४॥
देव मेरी मांग देर मत धारो।
राधास्वामी प्यारे गुरु दातार ॥१५॥

॥ शब्द १३६ ॥

सुरतिया निकट बसे।
गुरु दरस करे हर बार ॥ १ ॥

कर बिचार जग से अलगानी ।
परमारथ की जानी सार ॥ २ ॥
आस बासना तजी जगत की ।
राधास्वामी चरन अब गहे सम्हार ॥ ३ ॥
सतसंग बचन सुनत चित हरखत ।
सुरत चढ़ावत धुन की लार ॥ ४ ॥
सुखी होय करती गुरु संगा ।
बिसर गई अब जग ब्योहार ॥ ५ ॥
मगन होय देखत गुरु लीला ।
घट में निरखत बिमल बहार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बनत बन आई ।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ७ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपने ।
राधास्वामी गुन गावत हर बार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३७ ॥

सुरतिया बुंद अंस ।
आज सिंध सँग करत बिलास ॥ १ ॥

गुरु दरशन कर हुई दिवानी ।
तज दई जग की आस ॥ २ ॥
तन मन धन दोउ हाथ लुटावत ।
सेव करत रहे गुरु के पास ॥ ३ ॥
मस्त हुई सुन सतगुरु बचना ।
घट में निरखत शब्द उजास ॥ ४ ॥
ध्यान धरत हिये प्रेम बढ़ावत ।
पाया सतगुरु चरन निवास ॥ ५ ॥
अधर चढ़त निस दिन सुत प्यारी ।
नभ में लखती जोत प्रकाश ॥ ६ ॥
गरज मृदंग सुनी धुन दोई ।
गुरु पद में जाय कीना बास ॥ ७ ॥
उमंग उमंग सुत आगे चाली ।
सतपुर मिली शब्द की रास ॥ ८ ॥
हरख हरख करे सतगुरु दरशन ।
धर चरनन पूरन बिस्वास ॥ ९ ॥
प्रेम सिंध राधास्वामी प्यारे ।
उन चरनन की हुई निज दास ॥१०॥

आरत करूं प्रेम से गहरी ।

अब हियरे बढ़त हुलास ॥११॥

उमंग उमंग चरनन लिपटानी ।

राधास्वामी गुन गाऊं निस बास ॥१२॥

॥ शब्द १३८ ॥

सुरतिया समझ गई ।

अब राधास्वामी मत निज सार ॥ १ ॥

चित से चेत किया गुरु सतसंग ।

शब्द का जाना भेद अपार ॥ २ ॥

आदि धाम से जो धुन आई ।

वही हुई सब की करतार ॥ ३ ॥

सब रचना की जान वही है ।

वही नूर और प्रेम की धार ॥ ४ ॥

जहां जहां यह धारा ठहरानी ।

मंडल बांध करी रचन नियार ॥ ५ ॥

शब्द रची तिरलोकी सारी ।

शब्द से फैली माया झार ॥ ६ ॥

पांचो तत्त और गुन तीनों ।
शब्द रचीं सब रचन सम्हार ॥ ७ ॥
धुन का नाम आतमा होई ।
शब्द रूप तू सुरत बिचार ॥ ८ ॥
मन माया संग हुई मलीनी ।
इंद्रियन संग भरमी संसार ॥ ९ ॥
काम क्रोध बस दुख सुख भोगे ।
त्रिय तापन संग हुई बीमार ॥१०॥
जब लग मिलें न गुरु धुर धामी ।
फंसी रहे यह काल के जार ॥११॥
शब्द भेद दे पंथ लखावें ।
घट में परखावें धुन धार ॥१२॥
राधास्वामी परम पुरुष निज धामी ।
महिमां उनकी अगम अपार ॥१३॥
सुन सुन सुरत मगन होय मन में ।
प्रीत लाय परतीत सम्हार ॥१४॥
धुन की डोरी पकड़ अधर में ।
मन और सुरत चढ़ें धर प्यार ॥१५॥

सतगुरु संग बांध जुग चालें ।
काल कर्म से होवें न्यार ॥१६॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावे ।
मन का संग तज सूरत सार ॥१७॥
महासुन्न और भंवरगुफा चढ़ ।
पहुंच गई सतगुरु दरबार ॥१८॥
अलख अगम की धुन सुन पाई ।
राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥१९॥
सतगुरु दया काज हुआ पूरा ।
सहज मिला मोहिं निज घर बार ॥२०॥
राधास्वामी मत की महिमा भारी ।
काल देस से जीव निकार ॥२१॥
अमर धाम पहुचावें सतगुरु ।
तब होवें सच्चा निरवार ॥२२॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
तब भेटें सतगुरु सच यार ॥२३॥
दया मेहर से जीव उबारें ।
सहज मिलावें सत करतार ॥२४॥

राधास्वामी गुन मैं छिन २ गाऊं।
शुकर करूं उन बारम्बार ॥२५॥

॥ शब्द १३९ ॥

सुरतिया भाग चली।
तज काल देस संसार ॥ १ ॥
मन इंद्री संग बहु दुख पाये।
भोगन संग रही बीमार ॥ २ ॥
त्रिय तापन में तपत रही नित।
कोइ न मिला जो करे उबार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दया मिली गुरु संगत।
सुनियां घर का भेद अपार ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनत मगनानी।
दीन हुई हिये उपजा प्यार ॥ ५ ॥
दया करी दिया शब्द उपदेशा।
धुन डोरी गह उतरूं पार ॥ ६ ॥
मगन होय सुर्त घट में चाली।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ७ ॥

शब्द शब्द पौड़ी पै चढ़ कर ।
पहुंची राधास्वामी धाम अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४० ॥

सुरतिया जाय बसी ।
धुर धाम गुरू के संग ॥ १ ॥
सतगुरु ने मोहिं बाट लखाई ।
कर्म भर्म सब कीन्हें भंग ॥ २ ॥
प्रीत सहित सुनती अनहद धुन ।
दूत हुए सब घट में तंग ॥ ३ ॥
दया हुई सुर्त अधर सिधारी ।
काल कर्म भी रह गए दंग ॥ ४ ॥
प्रेम धार घट अंतर उमगी ।
हरख रही अंग अंग ॥ ५ ॥
सुरत गई दौड़ी सतपुर में ।
धारा सतगुरु रंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
हो गई सब से आज असंग ॥ ७ ॥

॥ बचन १० प्रेम बिलास भाग तीसरा ॥

मुरलिया

चेतावनी का अङ्ग

॥ शब्द १ ॥

कोइ सुनो बचन सतगुरू के सार ॥ टेक ॥
मन इंद्री जग में भरमावें।
इन से रहो हुशियार ॥ १ ॥
बिषयन से तुम होय उदासा।
चलो गुरू की लार ॥ २ ॥
सतसंग करो बचन हिये धारो।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सत पद का ले भेद गुरू से।
सुरत शब्द का मारग धार ॥ ४ ॥
बिरह अंग ले करो कमाई।
घट में सुन झनकार ॥ ५ ॥

दया मेहर राधास्वामी लेकर ।
उतरो भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ सुनो प्रेम से गुरु की बात ॥टेक॥
सेवा कर सतसंग कर उनका ।
और बचन उन हिये बसात ॥ १ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
मन और सूरत गगन चढ़ात॥ २ ॥
सुन सुन धुन मन होय रस माता ।
दिन दिन आनंद बढ़ता जात ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन ।
हिये में दरशन छिन छिन पात ॥ ४ ॥
भाग नवीन जगै तेरा भाई ।
छिन २ गुन सतगुरु के गात ॥ ५ ॥
आरत कर हिये प्रेम बढ़ाओ ।
दया मेहर की पाओ दात ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज करें तेरा पूरा ।
सरन धार तब चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आज चलो बिदेसन अपने देस
(पिया के देस) ॥टेक॥

या जग में पूरा सुख नाहीं।
फिर २ भोगो करम कलेश ॥ १ ॥
चलो २ नित काल पुकारे।
एक दिन तजना यह परदेस ॥ २ ॥
धन संपत कुछ संग न जावे।
छिन में छूटें यहां के ऐश ॥ ३ ॥
याते सोचो समझो प्यारी।
अबही सम्हालो अपनी बैस ॥ ४ ॥
सतगुरु खोज बांध जुग उनसे।
मन से त्यागो माया लेस ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धार हिये अंतर।
सुरत शब्द गह पहुंचो शेष ॥ ६ ॥
वहां से सतपुर चलो अधर चढ़।
सुरत धरे जहां हंसा भेस ॥ ७ ॥

राधास्वामी धाम गई अब निज घर ।
पाया परमानंद हमेश ॥ ८ ॥
अमर हुई दुख सुख सब छूटे ।
नित्त बिलास करे और ऐश ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज चलो पियारी अपने घर ॥ टेक ॥
जब से तुम परदेस सम्हारा ।
काल करम से यारी कर ॥ १ ॥
शब्द गुरू नित टेरत तोको ।
तू न सुने उन बानी चित धर ॥ २ ॥
माया ने बहु भोग उपाये ।
तू चेतन फंस रही संग जड़ ॥ ३ ॥
देह संग नित दुख सुख सहती ।
जनम मरन का डंड और कर ॥ ४ ॥
कहना मान पियारी मेरा ।
खोजो सतगुरु इस औसर ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धरो उन चरना ।
उन संग बाट चलो अड़ बड़ ॥ ६ ॥

राधास्वामी मेहर से लेहिं उबारी ।
सरन धार उन चरन पकड़ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

छोड़ करो गुरू का सतसंग आज ॥टेक॥
जो जग संग तुम रहो लिपटाई ।
परमारथ का होय अकाज ॥ १ ॥
जम के दूत सतावें तुम को ।
लख चौरासी नचावें नाच ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसंग ।
छोड़ जगत और कुल की लाज ॥ ३ ॥
प्रीत करो उन चरनन गहिरी ।
भक्ति भाव का पाओ साज ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ ।
त्रिकुटी जाय करो वहां राज ॥ ५ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा ।
करें मेहर से पूरन काज ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

कोइ सुनो हिये में गुरु संदेस ॥ टेक ॥
धार अधर से नित चल आवत ।
तू रहा लिपट करम के देस ॥ १ ॥
मोह नींद में जुग जुग सोता ।
भोगत रहे नित काल कलेश ॥ २ ॥
माया काल पड़े तेरे पीछे ।
दुखी रखत तोहि और दिल रेश ॥ ३ ॥
सतगुरु खोज उन बचन सम्हालो ।
छोड़ो जगत के भोग और ऐश ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की धारो जुगती ।
त्यागो मन से काम और तैश[अ] ॥ ५ ॥
प्रीत करो गाढ़ी गुरु चरनन ।
कपट छोड़ धर हंसा भेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया धार अब मन में ।
मिल चरनन से कर आदेस ॥ ७ ॥

(अ) तैश = क्रोध

॥ शब्द ७ ॥

आज तजो सुरत निज मन का मान ॥टेक॥
इसी मान ने जग भरमाया ।
यही मान करे सब की हान ॥ १ ॥
अहंग बुद्ध परदा है भारी ।
निज सरूप गुरु कभी न दिखान ॥ २ ॥
मान मनी जिस घट में भरिया ।
हिये नैन वाके कभी न खुलान ॥ ३ ॥
याते सब को ऐसा चहिये ।
अपनी कसर नित निरखें आन ॥ ४ ॥
दीन होय गिर सतगुरु चरना ।
अपने को जानो अनजान ॥ ५ ॥
तब सतगुरु और साध दया कर ।
भेद सुनावें अधर ठिकान ॥ ६ ॥
प्रीत सहित उन सतसंग करना ।
रहनी उन अनुसार रहान ॥ ७ ॥
सुन उन बचन भाव जग त्यागो ।
सुरत शब्द का गहो निशान ॥ ८ ॥

दास अंग ले सेवा करना ।
ताड़ मार उन सही निदान ॥ ९ ॥
काम क्रोध को मन से तजना ।
सील छिमा चित माहिं बसान ॥१०॥
जो कोई बचन कहें तोहि कडुवा ।
और कोइ तान और दोष लगान ॥११॥
नीच निकाम समझ आपे को ।
तो भी उन से मन न फिरान ॥१२॥
कोई बात से मन नहिं उलटे ।
गुरु को नित तू गुरुही जान ॥१३॥
भय और भाव सदा उन राखो ।
बचन सुनो उन चित से आन ॥१४॥
बचन अनुसार करो तुम करनी ।
गहनी रहनी संग मिलान ॥१५॥
अस २ भाव लाय जो गुरु से ।
उसको दें अपनी पहिचान ॥१६॥
उमंग उमंग करे सेवा निस दिन ।
हरख हरख करे दरशन आन ॥१७॥

दिन दिन जागे प्रीत नवीना ।

धर परतीत करे उन ध्यान ॥१८॥

दीन होय मन बस में आवे ।

शब्द माहिं तब सुरत समान ॥१९॥

प्रेम धार नित घट में जारी ।

दिन २ अनुभव सहज जगान ॥२०॥

रहन गहन गुरमुख की गाई ।

गुरमुख होय सो ले पहिचान ॥२१॥

राधास्वामी मेहर रहे नित संगा ।

सहज २ पट अधर खुलान ॥२२॥

जोत निरख पहुंचे गगनापुर ।

सुन्न परे मुरली सुन तान ॥२३॥

सत्तनूर सतपुर जाय निरखे ।

अलख अगम के महल बसान ॥२४॥

वहां से धुर घर पहुंचे छिन में ।

राधास्वामी चरन परस मगनान ॥२५॥

॥ शब्द ८ ॥

आज करो गुरू संग प्रीत सम्हार॥टेक॥

मन इंद्री भोगन में अटके ।
जग जीवन संग अधिका प्यार ॥ १ ॥

जग की चाह बसै नित मन में ।
छिन छिन उसका करत बिचार ॥ २ ॥

ऐसे जीव करें जो सतसंग ।
बचन गुरू नहिं चित में धार ॥ ३ ॥

संसय भरम धसे उन मन में ।
जग और कुल की रीत न टार ॥ ४ ॥

सतसंगी अपने को कहते ।
गुरु भक्ती दई रीत बिसार ॥ ५ ॥

गुरु सतसंगी जो समझावें ।
रूसें निंद्या करें पुकार ॥ ६ ॥

यह जिव रहते दया से खाली ।
गुरु को धोखा देत लबार ॥ ७ ॥

उन को भी स्वामी परम दयाला ।
देर अबेर लगावें पार॥ ८ ॥

याते सच्ची भक्ती कीजे।
सोच समझ कर धर गुरु प्यार ॥ ९ ॥
संत मता सब मत से ऊंचा।
धुर घर का पहुंचावन हार ॥ १० ॥
सच्चा सीधा सहज अभ्यासा।
सहज करे सच्चा उद्धार ॥११॥
सतसंग कर समझौती लीजे।
संसय भरम को दूर निकार ॥१२॥
जगत बासना मन से तजना।
जग जीवन की मत कर यार ॥१३॥
अनेक तरंग उठें इस मन में।
उनको जस तस मन में मार ॥१४॥
प्रीत प्रतीत बसाओ हिये में।
राधास्वामी नाम का कर आधार ॥१५॥
जहां २ प्रीत लगी अब तेरी।
वहीं २ हुआ तेरा बंधन यार ॥१६॥
सहज हटाओ मन को वहां से।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥१७॥

जब गुरु चरनन होय दृढ़ प्रीती।
सरन धार परतीत सम्हार ॥१८॥
सब से गुरु जब प्यारे होई।
तब कुल मालिक होय दयार ॥१९॥
मेहर करें तुझ पर वे हर दम।
सुरत चढ़ावें नौ के पार ॥२०॥
इक दिन पहुंचावें धुर घर में।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥२१॥

॥ शब्द ९ ॥

आज पकड़ो गुरु के चरन सम्हार ॥टेक॥
बिन गुरु तेरा और न कोई।
वोही हैं तेरे रखवार ॥ १ ॥
कब लग मन संग खाव झकोले।
कब लग भरमो जग की लार ॥ २ ॥
जगत भोग सब रोग पहिचानो।
इन की चाह मन से तज डार ॥ ३ ॥
दृढ़ परतीत धरो गुरु चरनन।
और बढ़ाओ दिन दिन प्यार ॥ ४ ॥

तेरा काज करेंगे वोही ।
गफ़लत तज अब हो हुशियार ॥ ५ ॥
घट में थिर होय करो कमाई ।
सुनो सुरत से धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
पहुंचावें तोहि धुर दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

कोइ चलो आज सतगुर की लार ॥टेक॥
जग जीवन का संग तियागो ।
गुर भक्तन से करो पियार ॥ १ ॥
धुर पद की कर मन परतीती ।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ २ ॥
धुर पद है वह राधास्वामी ।
कुल मालिक समरथ दातार ॥ ३ ॥
उन चरनन में प्रीत लगाओ ।
राधास्वामी नाम जपो हर बार ॥ ४ ॥

सतसंग कर सब भरम निकालो।
ध्यान लगाओ सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन इंद्रियन को रोक अंदर में।
घट में परखो धुन की धार ॥ ६ ॥
जो अस करो अभ्यास प्रेम से।
राधास्वामी मेहर से लेहिं उबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

कोइ परखो गुरू की लीला सार ॥टेक॥
सतसंग करो चेत कर निस दिन।
घट में करो अभ्यास सम्हार ॥ १ ॥
मन माया की चाल निरखना।
गुरु की मेहर परख हर बार ॥ २ ॥
जो सच्चा होय सरनी आवे।
तिसको सतगुरु लेहिं उबार ॥ ३ ॥
दिन दिन मौज दिखावें न्यारा।
काल करम रहैं बाज़ी हार ॥ ४ ॥

मन और सूरत अधर चढ़ावें ।
अपना सहारा देकर प्यार ॥ ५ ॥
घट में लीला अजब दिखावें ।
धाम धाम की रचन नियार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
गोद बिठाय उतारें पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

कोइ झांको झंझरिया बिरह सम्हार ॥टेक॥
या जग में पूरन सुख नाहीं ।
सुद्ध करो तुम निज घरबार ॥ १ ॥
जनम जनम यहां दुख सुख सहना ।
छूटे नहीं काल का जार ॥ २ ॥
याते सतगुरु खोजो भाई ।
भेद लेव तुम घर का सार ॥ ३ ॥
मन इंद्री को रोक अंदर में ।
ध्यान करो गुरु प्रीत सम्हार ॥ ४ ॥

शब्द होत तेरे घट में हर दम ।
सुरत लगाय सुनो कर प्यार ॥ ५ ॥
सहज २ फिर चढ़ो अधर में ।
पहिले ताको तिल का द्वार ॥ ६ ॥
द्वारा फोड़ चलो आगे को ।
निरखो निरमल जोत उजार ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
सहज लगावें तुझ को पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

कोइ परसो चरन गुरु चढ़ गगना ॥ टेक ॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हालो ।
सतसंग में तुम नित जगना ॥ १ ॥
माया घात बचा कर चालो ।
यामें काल करे ठगना ॥ २ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाओ ।
शब्द जुगत में नित लगना ॥ ३ ॥

सतगुरु चरन ध्यान धर घट में ।
दरस पाय मन हुआ मगना ॥ ४ ॥
द्वारा फोड़ अधर को चाली ।
जोत रूप वहां नित तकना ॥ ५ ॥
काल करम दोउ रहे मुरझाई ।
अब मोहिं रोक नहीं सकना ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय मगन होय बैठी ।
राधास्वामी चरन माहिं पकना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

कोइ चलो उमंग कर सुन नगरी ॥टेक॥
सतसंग में अब तन मन देना ।
शब्द पकड़ चलो गुरु डगरी ॥ १ ॥
सतगुरु से नित प्रीत बढ़ाना ।
चरन सरन दृढ़ कर पकड़ी ॥ २ ॥
सोता मनुआं फिर उठ जागे ।
धुन संग सुरत रहे जकड़ी ॥ ३ ॥

प्रेम पंख ले उड़ी गगन में ।
राधास्वामी बल से हुई तकड़ी ॥ ४ ॥
काल करम अब रहे मुरझाई ।
धुन रही सिर माया मकड़ी ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर पाया ।
अमर हुई चरनन लग री ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

चलो चढ़ोरी सुरत सुन सुन्न की धुन ।
अब छोड़ सकल मन के औगुन ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन छिन ।
राधास्वामी रूप धियाओ पुन पुन ॥ २ ॥
धुन शब्द सुनो घट में चुन चुन ।
गुरु महिमां गाय रहो खिन खिन ॥ ३ ॥
तज देव बिकारों को गिन गिन ।
तब माया काल से हो भिन भिन ॥ ४ ॥
गुरु मेहर करूं घट मन मंजन ।
नभ में लख जोत सुनूं घन घन ॥ ५ ॥

अभ्यास करूं घट में दिन दिन ।
धुन शब्द सुनूं हिये में रुनझुन ॥६॥
धुर धाम गई राधास्वामी धुन सुन ।
अब हरख कहूं राधास्वामी धन धन ॥७॥

॥ शब्द १६ ॥

कोइ मिलो पुरुष से चल सतपुर ॥टेक॥

तीन लोक यह काल अस्थाना ।
चौथे लोक बसें सतगुर ॥ १ ॥
संत बिना कोइ वहां न जावे ।
वे पहुचावें तोहि घर धुर ॥ २ ॥
सेवा कर उन लेव रिझाई ।
प्रीत प्रतीत बसावो उर ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करो कमाई ।
सतगुरु बल ले मारग तुर ॥ ४ ॥
माया बिघन न लागे कोई ।
नहिं व्यापे तोहि काल का जुर ॥५॥

सुन में जाय होय तू निर्मल ।
हंसन संग चुने तू दुर ॥ ६ ॥
सतपुर जाय मिले सतगुरु से ।
राधास्वामी दया या जग से मुर ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

कोइ चलो गुरू संग अगम नगर ॥टेक॥
जगत बासना मन से त्यागो ।
सतगुरु खोज उन चरन पकड़ ॥ १ ॥
समझ बूझ गुरु बचन सम्हालो ।
भेद पाय लो घर की डगर ॥ २ ॥
जो गुरु जुगत बतावें तुमको ।
नित्त कमाओ हिये प्यार धर ॥ ३ ॥
गुरु बल पांच दूत को पकड़ो ।
मन इंद्री को बांध जकड़ ॥ ४ ॥
जब घट में मन अस्थिर होवे ।
सुन सुन धुन सुर्त चढ़ै अधर ॥ ५ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह दृढ़ कर ।
इक दिन जाय बसो तुम निज घर ॥ ६ ॥

बिरह का अंग

॥ शब्द १८ ॥

बोल री मेरी प्यारी मुरलिया ।
तरस रही मेरी जान (मुर०) ॥ १ ॥
सुन सुन धुन मन उमगत घट में ।
और सिथल हुए प्रान (मुर०) ॥ २ ॥
रस भरे बोल सुने जब तेरे ।
गया कलेजा छान (मुर०) ॥ ३ ॥
तन मन की सब सुद्ध बिसारी ।
धुन में चित्त समान (मुर०) ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया अधर चढ़ आई ।
सत पद दरस दिखान (मुर०) ॥ ५ ॥

भेट का अंग

॥ शब्द १९ ॥

आज बाजै मुरलिया प्रेम भरी ॥ टेक ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल गावें।
सतसंगिन सब उमंग भरी ॥ १ ॥
प्रेम रंग रही भींज सुरतिया।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ २ ॥
झलक जोत और सूर प्रकाशा।
लख तन मन से होत छड़ी ॥ ३ ॥
निरमल होय चली ऊपर को।
सुन्न महासुन पार खड़ी ॥ ४ ॥
भंवरगुफा में सोहंग बंसी।
बाज रही मधुरी मधुरी ॥ ५ ॥
सत्त अलख और अगम परस कर।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

आज बाजै बीन सतपुर की ओर ॥ टेक॥

सुन धुन सुरत हुई मस्तानी ।
गई भंवर चढ़ ऊपर दौड़ ॥ १ ॥

पुरुष दरस कर अति मगनानी ।
सनमुख हुई ले आरत जोड़ ॥ २ ॥

हंस सभी अब जुड़ मिल गावें ।
आरत की हुई धूम ओर शोर ॥ ३ ॥

प्रेम सिंध में आय समानी ।
मिट गया महाकाल का ज़ोर ॥ ४ ॥

यह पद मेहर दया से पाया ।
जब मिले राधास्वामी बंदीछोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

आज बाजै भंवर धुन मुरली सार ॥टेक॥

यह मुरली सतलोक से आई ।
सोहंग पुरुष किया बिस्तार ॥ १ ॥

जिन जिन सुनी आन यह बंसी।
मोह रहे धर प्यार ॥ २ ॥
दूर हुए मान और अहंकारा।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ३ ॥
यह धुन कोइ बड़भागी पावे।
जापर सतगुरु होयं दयार ॥ ४ ॥
मुरली की छाया धुन सुन कर।
मोहे सब सुर नर और नार ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
ताहि सुनावें यह धुन सार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २२ ॥

आज बाजै सुन्न में सारंग सार ॥ टेक ॥
उठत मधुर धुन अमीरस भीनी।
सुनत पिरेमी कोइ धर प्यार ॥ १ ॥
अजब धाम जहां सेत उजारा।
खिल रही जहां वहां सदा बहार ॥२॥

तिरलोकी का मूल अस्थाना ।
संतन का वही दसवां द्वार ॥ ३ ॥
ब्रह्म शब्द तिस नीचे जागा ।
मूल नाद जहां धुन ओंकार ॥ ४ ॥
सूरज मंडल लाल प्रकाशा ।
तिरलोकी का वही करतार ॥ ५ ॥
माया शब्द उठत तेहि नीचे ।
जग में बिछाया जिस ने जार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले भाग से ।
सहज उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥
कर आरत उन हुई मगन में ।
बैठी राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २३ ॥

आज गाऊँ गगन धुन ओअं सार ॥टेक॥
नाद धाम से यह धुन आई ।
कीना जगत पसार ॥ १ ॥

ब्रह्म और पार ब्रह्म तिस नामा ।
तीन लोक में तिस उजियार ॥ २ ॥
सूक्ष्म पांच तत्त गुन तीनों ।
परघट हुए जस नूर की धार ॥ ३ ॥
घंटा संख शब्द उपजाये ।
माया फैली जग में झाड़ ॥ ४ ॥
यासे कोई न बचने पावे ।
बिन सतगुरु आधार ॥ ५ ॥
मैं निज भाग सराहूं अपना ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनो गगन धुन धर कर प्यार ॥टेक॥
श्याम कंज की राह अधर चढ़ ।
निरख जोत उजियार ॥ १ ॥
सहसकंवल दल घंटा बाजे ।
और सुनो वहां संख पुकार ॥ २ ॥

बंकनाल होय त्रिकुटी फोड़ो ।
निरखो सूर उजियार ॥ ३ ॥
गरज मृदंग संग ओअं गाजे ।
तिरलोकी का मूल अधार ॥ ४ ॥
बिना प्रेम कोई राह न पावे ।
गुरु से पावे प्रेम पियार ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में ।
शब्द पकड़ जावो घट पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

चढ़ सहस कंवल पद परस हरी ॥टेक॥
सुन सुन घंटा रीझ रही अब ।
झलक जोत लख उमंग बढ़ी ॥ १ ॥
गुन तीनों यहां से उतपाने ।
सत रज तम जिय धार बड़ी ॥ २ ॥
माया नें किया बहुत बिस्तारा ।
काल टेक सब जीव धरी ॥ ३ ॥

चार खान चौरासी धारा ।
यहां से हुई सब रचन खड़ी ॥ ४ ॥
पाप पुन्य का फल सब भोगें ।
पार न जावें वार रही ॥ ५ ॥
जिन को सतगुरु मिलें दया कर ।
सोई जीव भौसिंध तरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी मिले भाग से हम को ।
उन चरनन सुर्त जोड़ धरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २६ ॥

आज गाजे सुरतिया अधर चढ़ी ॥ टेक ॥

गुरु परताप चली अब घट में ।
सुरत शब्द की टेक धरी ॥ १ ॥
तिल अंतर लख सेत उजारी ।
झिल मिल जोती नज़र पड़ी ॥ २ ॥
बंकनाल होय गई त्रिकुटी में ।
मान मोह मद सकल हरी ॥ ३ ॥

काल दिया मोहिं अधिक भुलावा ।
गुरू टेक से नाहिं टरी ॥ ४ ॥
सुन में जाय सुरत हुई निर्मल ।
बाजत जहां सारंग किंगरी ॥ ५ ॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई ।
भरी अमीं से सुर्त गगरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
हुई सुरत अब अजर अमरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

कोई निरखो अधर चढ़ पिछली रात ॥टेक॥
अमीं धार पल पल हिये झिरती ।
घट में अति आनंद समात ॥ १ ॥
जोत उजार होत निज घट में ।
घंटा संख मधुर धुन गात ॥ २ ॥
हरख हरख मन उमंगत घट में ।
रस पीवत सुर्त अधर चढ़ात ॥ ३ ॥

माया काल तजत निज कौतुक ।
छिन छिन हियरे प्रेम बढ़ात ॥ ४ ॥
सात्वकी रहन रहत अस औसर ।
गुरु चरनन में लगन लगात ॥ ५ ॥
मेहर पाय सुर्त चढ़त अधर में ।
गगन गुरू के दरशन पात ॥ ६ ॥
गरज गरज धुन ओअंग गाजे ।
काल करम जहां रहे लजात ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़ी ऊंचे को ।
हंसन संग बिलास करात ॥ ८ ॥
धुन झनकार उठत जहां भारी ।
नाचत गावत अति सुख पात ॥ ९ ॥
महासुन्न होय धसी गुफा में ।
मधुर मधुर मुरली धुन आत ॥१०॥
सत्तपुरुष का रूप निहारा ।
सत्त शब्द जहां बीन बजात ॥११॥
अलख अगम के पार पहुंच कर ।
राधास्वामी चरनन टेका माथ ॥१२॥

तेज पुंज वह देस अनूपा ।
अद्भुत सोभा बरनी न जात ॥ १३ ॥
अगिनित सूर चंद्र परकाशा ।
किंगरे किंगरे रहे बसात ॥१४॥
दया मेहर जस राधास्वामी कीनी ।
महिमां उसकी को कह गात ॥ १५ ॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द २८ ॥

आज लाई सुरतिया आरत साज ।
मन इंद्रियन से छिन छिन भाज ॥ १ ॥
उमंग जगाय चरन गुरु सेवत ।
जग जीवन की तज दई लाज ॥ २ ॥
सतसंगियन संग हिल मिल चालत ।
मन दर्पन को बहु बिध मांज ॥ ३ ॥
सुरत शब्द ले भेद अपारा ।
चित दे सुनत गगन की गाज ॥ ४ ॥

सतगुरु पूरे दया करी अब ।
प्रेम भक्ति का दीना दाज ॥ ५ ॥
मगन होय गुरु के गुन गावत ।
अब हुआ मेरा पूरन काज ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया चढ़ी निज घट में ।
वहां बैठ अब भोगूं राज ॥ ७ ॥

॥ शब्द २९ ॥

आज आई सुरतिया भाव भरी ॥टेक॥

नैन कंवल का थाल बनाया ।
पलकन की वामें जड़ी छड़ी ॥ १ ॥
दृष्टी की जहां जोत जगाई ।
तिल दिवला में आन धरी ॥ २ ॥
शब्द गुरू संग आरत धारी ।
गावत सन्मुख आन खड़ी ॥ ३ ॥
काल और करम रहे थक नीचे ।
माया ममता सकल जरी ॥ ४ ॥

सुन में निरखत हंस बिलासा।
गुरु संग उड़ी ज्यों उड़त परी ॥ ५ ॥
सतपुर जाय करी फिर आरत।
धुन बीना जहां बजै मधुरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब डारी।
आरत कर उन चरन पड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३० ॥

आज गावे सुरत गुरु आरत सार। टेक॥
प्रेम भरी गुरु सन्मुख आई।
तन मन दीना वार ॥ १ ॥
उमंग उमंग गुरु दरस निहारत।
बढ़न हरख और प्यार ॥ २ ॥
परमारथ अब मीठा लागा।
और किरत सब दई बिसार ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में आय पड़ी अब।
सतसंग करत हुई हुशियार ॥ ४ ॥

पी पी रस हिये में त्रिप्तानी ।
मिला सुरत को शब्द अधार ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर पाय घर चाली ।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २१ ॥

आज आई सुरतिया रंग भरी ॥ टेक ॥
मन चित का लिया थाल सजाई ।
प्रेम की जोत जगाय धरी ॥ १ ॥
उमंग उमंग कर आरत फेरत ।
सकल पसार से होय छड़ी ॥ २ ॥
हंस हंसनी होय इकट्ठे ।
गुरु सन्मुख सब आन खड़ी ॥ ३ ॥
आनंद छाय रहा आकाशा ।
शब्दन की अब लगी झड़ी ॥ ४ ॥
ताल मृदंग झांगरी बाजे ।
धूम धाम अब मची बड़ी ॥ ५ ॥

सुन सुन मुरली बीन सुहावन।
सत्तलोक जाय सुरत अड़ी ॥ ६ ॥
निरख रही जहां बिमल प्रकाशा।
चांद सूर की छुटी लड़ी ॥ ७ ॥
हरख हरख राधास्वामी गुन गावत।
पल पल छिन छिन घड़ी घड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

आज खेलूं कबड्डी घट में आय ॥टेक॥
तीसर तिल का पाला बनाया।
दो दल घट में लिये जमाय ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम पुकारत धाऊं।
बैरियन को लूं तुरत गिराय ॥ २ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने।
काल बली को मारूं धाय ॥ ३ ॥
माया जाल तोड़ दूं छिन में।
गुरु चरनन घट प्रेम जगाय ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया खेत को जीतूं ।
काल से लूं असवारी जाय ॥ ५ ॥
काम क्रोध मान और अहंकारा ।
निर्बल होय सब रहे लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम दुहाई फेरूं ।
फ़तह का झंडा खड़ा कराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

आज आई सुरत गुरु आरत धार ॥टेक॥
खोज लगावत सन्मुख आई ।
सुने बचन गुरु सार ॥ १ ॥
मगन हुई संसय सब भागे ।
दूर हुए सब भोग बिकार ॥ २ ॥
भेद पाय घट धुन में लागी ।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥ ३ ॥
हरख हरख करती सतसंगा ।
अंतर बाहर धर कर प्यार ॥ ४ ॥

उमंग उमंग सेवा नित करती ।
राधास्वामी चरनन तन मन वार ॥ ५ ॥
मन ने त्याग दई अब धावन ।
थिर होय बैठा शब्द सम्हार ॥ ६ ॥
भोग बासना तज दई सारी ।
चित हुआ निरमल चरन अधार ॥ ७ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भाग बड़ जागा ।
कस उन महिमां कहूं पुकार ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

कोइ सुने पिरेमी घट धुन सार ॥टेक॥
इंद्री भोग लगे सब फीके ।
मन आसा दई सकल बिसार ॥ १ ॥
गुरु दर्शन में लागा मनुआं ।
बचन सुनत हिये खिला गुलज़ार ॥ २ ॥

मेहर करी गुरु भेद बताया ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनत धुन ओअंग ।
सुरत हुई तन मन से न्यार ॥ ४ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
निरखा सेत चंद्र उजियार ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी ।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ६ ॥
अलख अगम का झांक अस्थाना ।
राधास्वामी चरनन हुई बलिहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

मेरी लागी गुरु संग प्रीत नई ॥ टेक ॥
सतसंग कर गुरु सेवा लागी ।
सरधा सहित उपदेश लई ॥ १ ॥
जगत भाव भय मन में राखत ।
साधारन गुरु टेक गही ॥ २ ॥

मन इंद्री को मोड़ा नाहीं ।
भजन ध्यान अस करत रही ॥ ३ ॥
सतगुरु दया दृष्टि अब कीनी ।
घट में प्रीत जगाय दई ॥ ४ ॥
जग जंजाल भोग इंद्री के ।
चित से सहज बिसार दई ॥ ५ ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
शब्द की हुई परतीत सही ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया सुधारी ।
भौसागर के पार गई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

आज खेलै सुरत गुरु चरनन पास ॥टेक॥
न्यारा कर गुरु लिया अपनाई ।
चरन मिले निज सुख की रास ॥ १ ॥
नित गुरु दर्शन करूँ उमँग से ।
यही मैं मन में धरती आस ॥ २ ॥

गुरू सम और न प्यारा लागे।
गुरूही का नित करूं बिस्वास ॥ ३ ॥
छिन नहिं बिछडूं चरन गुरू से।
गुरूही के संग रहूं निस बास ॥ ४ ॥
गुरू पर तन मन धन सब वारूं।
गुरू दासन की हुई मैं दास ॥ ५ ॥
भोग बिलास जगत नहिं भावें।
जग से रहती सहज उदास ॥ ६ ॥
राधास्वामी से कुछ और न मांगूं।
दीजे मोहिं निज चरन निवास ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमां निस दिन गाऊं।
राधास्वामी सुमिरूं स्वांसो स्वांस ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

आज गावो गुरू गुन उमंग जगाय ॥टेक॥
दया धार धुर घर के बासी।
नर देही में प्रघटे आय ॥ १ ॥

निज घर का मोहिं पता बताया ।
मारग का दिया भेद लखाय ॥ २ ॥
भिन्न भिन्न निरनय मंज़िल का ।
मेहर से दीना खोल सुनाय ॥ ३ ॥
अपनी दया का दीन सहारा ।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ४ ॥
करम भरम की फांसी काटी ।
काल करम से लिया बचाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ा कर हिये में ।
दीना घर की ओर चलाय ॥ ६ ॥
जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से ।
सो रहे माया संग लिपटाय ॥ ७ ॥
जनम जनम वे दुख सुख भोगें ।
भरमें चार खान में जाय ॥ ८ ॥
दया मेहर का कस गुन गाऊं ।
जस सतगुरु ने करी बनाय ॥ ९ ॥
किरपा कर मोहिं आपहि खींचा ।
और चरनन में लिया लगाय ॥१०॥

जो अस मेहर न करते मुझ पर ।
काल जाल में रहत फंसाय ॥११॥
मैं बल हीन करूं क्या महिमां ।
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाय ॥१२॥

॥ शब्द ३८ ॥

आज आई सुरतिया उमंग भरी ॥टेक॥
सुन गुरु बचन मगन मन होती ।
नैन कंवल दृष्टि जोड़ धरी ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन ।
आसा जग की आज जरी ॥ २ ॥
गुरु से लीना सार उपदेशा ।
सुरत गगन की ओर चढ़ी ॥ ३ ॥
करम धरम सब पटक दिये हैं ।
मन माया से खूब लड़ी ॥ ४ ॥
काल जाल डाले बहुतेरे ।
गुरु बल हिये धर नहीं डरी ॥ ५ ॥

राधास्वामी लिया मोहिं अपनाई।
भौसागर से आज तरी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज नाचै सुरतिया गगन चढ़ी ॥टेक॥

सुन सुन धुन सखियन को संग ले।
ठुमक ठुमक पग अधर धरी ॥ १ ॥
ताल मृदंग बजै सारंगी।
और मुरलिया रंग भरी ॥ २ ॥
जुड़ मिल सब नाचें और गावें।
राग रागिनी प्रेम भरी ॥ ३ ॥
शब्दन की झनकार सुनावत।
अमृत बरखा लगी झड़ी ॥ ४ ॥
हंस हंसिनी देख बिलासा।
झुंड झुंड सब आन खड़ी ॥ ५ ॥
अस लीला राधास्वामी दिखाई।
दया मेहर मोपै करी बड़ी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

आज सुनत सुरतिया घट में बोल ॥टेक॥

उमंग उमंग लागी अब घट में ।
करत धुनन संग चोल ॥ १ ॥

गुरु पै वार रही अब तन मन ।
चित से सुनती बचन अनमोल ॥ २ ॥

संत मता अति ऊंचा सीधा ।
दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतोल ॥ ३ ॥

परमारथ में हित कर लागी ।
सुफल हुई नर देह अमोल ॥ ४ ॥

प्रीत जगत की निपट स्वारथी ।
देखी निज कर जांच और तोल ॥ ५ ॥

राधास्वामी मुझ पर हुए दयाला ।
दूर किये सब माया खोल ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

राधास्वामी चरन में मन अटका ॥टेक॥

गुरु के बचन रसीले लागे ।
जग से अब छिन छिन झटका ॥ १ ॥
करम धरम और जग ब्योहारा ।
सब को अब धर धर पटका ॥ २ ॥
इंद्री भोग और जगत पदारथ ।
सब का मेट दिया खटका ॥ ३ ॥
भेद पाय सुर्त लागी घट में ।
शब्द संग अब मन लटका ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी धारी ।
काल करम को दिया झटका ॥ ५ ॥
सुरत चढ़ाय गगन में पहुंची ।
कर्मन का फूटा मटका ॥ ६ ॥
सतपुर दरस पुरुष का पाया ।
प्रेम रंग अब नया चटका ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर अस कीनी ।
खेल खिलाया मोहिं नट का ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

राधास्वामी चरन में सुर्त लागी ॥टेक॥

मोह जाल जंजाल तोड़ कर ।
जग से अब छिन छिन भागी ॥ १ ॥

सुन गुरु बचन मगन हुआ मनुआं ।
शब्द संग सूरत जागी ॥ २ ॥

संसय भरम अब गये नसाई ।
करम धरम बिच दई आगी ॥ ३ ॥

काम क्रोध और लोभ बिकारा ।
मान ईरखा दई त्यागी ॥ ४ ॥

सतगुरु चरनन प्यार बढ़ावत ।
मन हुआ धुन रस अनुरागी ॥ ५ ॥

राधास्वामी सरन धार हिये अंतर ।
मेहर दया उनसे मांगी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

राधास्वामी प्रीत हिये छाय रही ॥टेक॥

जब से स्वामी दर्शन कीने ।
छबि उनकी मन भाय रही ॥ १ ॥
उमंग उमंग सेवा में लागी ।
राधास्वामी दया नित पाय रही ॥ २ ॥
हित चित से करती सतसंगा ।
नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ३ ॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा ।
गुरु सरूप हिये ध्याय रही ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
घट में आरत गाय रही ॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला ।
चरनन सुरत लगाय रही ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

आज आई सुरतिया उमंग सम्हार ॥टेक॥
जगत भोग से कर बैरागा ।
तन मन धन गुरु चरनन वार ॥ १ ॥

जग जीवन का संग तियागा ।

सतसंग में लगी धर कर प्यार ॥ २ ॥

गुरु सरूप निरखत मोहा मन ।

घर बाहर की सुद्ध बिसार ॥ ३ ॥

बचन गुरू के प्यारे लागे ।

सेवा करत भाव हिये धार ॥ ४ ॥

सहज सुरत लागी अंतर में ।

घट में सुन अनहद झनकार ॥ ५ ॥

राधास्वामी प्यारे मेहर कराई ।

सहज किया मेरा बेड़ा पार ॥ ६ ॥

बिनती का अंग

॥ शब्द ४५ ॥

आज मांगे सुरतिया भक्ती दान ॥टेक॥

त्रिय तापन संग बहु दुख पाये ।

फीका लगा जहान ॥ १ ॥

खोजत खोजत सतसंग पाया ।

मगन हुई गुरु सनमुख आन ॥ २ ॥

प्रेम सहित गुरु सेवा धारी ।
गुरु सरूप का धारा ध्यान ॥ ३ ॥
दर्शन रस घट में नित लेती ।
तन मन धन करती कुरबान ॥ ४ ॥
शब्द जुगत नित पितर कमाती ।
धुन संग मन और सुरत लगान ॥ ५ ॥
नई प्रतीत प्रीत घट जागी ।
सतगुरु की करनी पहिचान ॥ ६ ॥
मेहर हुई सुर्त अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

आंज मांगे सुरतिया गुरु का संग ॥टेक॥
मोह जाल में रही फँसानी ।
नहिं जाने कुछ भक्ती ढंग ॥ १ ॥
ख़बर पाय राधास्वामी संगत की ।
हरख हरख रही अंग अंग ॥ २ ॥

औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनत हिये बढ़ी उमंग ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले जूझत मन से ।
त्यागत सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा ।
मारत काल निहंग ॥ ५ ॥
सुनत शब्द धुन चढ़त गगन पर ।
बाज रहो जहां नित मिरदंग ॥ ६ ॥
सतपुर जाय मिली सतगुरु से ।
राधास्वामी चरनन धारा रंग ॥ ७ ॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४७ ॥

राधास्वामी सरन निज कर धारी ॥टेक॥
भाग जगे राधास्वामी मोहिं भेटे ।
चरनन प्रीत लगी सारी ॥ १ ॥
निरख रही स्वामी रूप अनूपा ।
सोभा उसकी अति भारी ॥ २ ॥

मन और सुरत सिमट कर आये।
छबि पर दृष्टि तनी न्यारी ॥ ३ ॥
हरख अधिक अब हिये समाया।
चित हुआ चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥
इत से मोड़ अधर को चाली।
घंटा संख धूम डारी ॥ ५ ॥
जोत निरख त्रिकुटी को धाई।
खिल गई घट कंवलन क्यारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी।
पहुंचाया सतगुरु बाड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

राधास्वामी चरन दृढ़ कर पकड़े ॥टेक॥
सतसंग में चित जाय समाना।
छोड़ दिये जग के झगड़े ॥ १ ॥
मन इंद्रियन बहु नाच नचाया।
मेट दिये उनके रगड़े ॥ २ ॥

माया कीने बिघन अनेका ।
और दिखलाये बहु झगड़े ॥ ३ ॥
राधास्वामी बल मैं हिरदे धारा ।
गुरु ने किया मोहिं अब तकड़े ॥ ४ ॥
मोहिं दीन को आप सम्हारा ।
दूर कराये बिघन सगरे ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरन सरन मैं लीना ।
काल करम थक रहे मग रे ॥ ६ ॥

होली

॥ शब्द ५९ ॥

होली खेलै सुरतिया सतगुरु संग ॥टेक॥
अबीर गुलाल थाल भर लाई ।
भर भर डालत रंग ॥ १ ॥
सतसंगी मिल आरत लाये ।
गावें उमंग उमंग ॥ २ ॥
देख समां सब होत मगन मन ।
फड़क रहे अंग अंग ॥ ३ ॥

आनंद बरस रहा चहुं दिस में ।
दूर हुई अब सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से ।
सब को लगाया अपने अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

होली खेलै सुरत आज हंसन संग ॥टेक॥
घंटा संख मृदंग बजावत ।
चढ़ा प्रेम का रंग ॥ १ ॥
नैन नगर होय चढ़ी अधर में ।
तन से होय असंग ॥ २ ॥
झलक जोत और उमंग घटा की ।
निरखी छोड़ तरंग ॥ ३ ॥
गगन जाय रंग माट भराया ।
गुरु से खेली होय निशंक ॥ ४ ॥
धरन गगन बिच धूम मची अब ।
भींज रही अंग अंग ॥ ५ ॥

सुरत अबीर भरत अब सुन में ।
फाग रचाया उमंग उमंग ॥ ६ ॥
सरन सम्हारे चरन में पहुंची ।
धारा राधास्वामी रंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

मेरे उठी कलेजे पीर घनी ॥ टेक ॥
बिन दरशन जियरा नित तरसे ।
चरन ओर रहे दृष्टि तनी ॥ १ ॥
नित्त पुकार करूं चरनन में ।
दरस देव मेरे पूरन धनी ॥ २ ॥
घट का पाट खोलिये प्यारे ।
जल्दी करो हुई देर घनी ॥ ३ ॥
जब लग दरस न पाऊं घट में ।
तब लग नहिं मेरी बात बनी ॥ ४ ॥
हरख हुलास न आवे मन में ।
चिंता में रहे बुद्धि सनी ॥ ५ ॥

अब तो मेहर करो राधास्वामी ।
चरनन की रहूं सदा रिनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

कोई जागे सुरत सुन गुरु बचना ॥टेक॥
मोह नींद में सब जिव सोते ।
काम क्रोध संग नित पचना ॥ १ ॥
इंद्री भोग लगे अति प्यारे ।
उनहीं में निस दिन खपना ॥ २ ॥
कोइ कोइ जीव फड़क या जग से ।
संत चरन में करें लगना ॥ ३ ॥
देख ब्योहार असार जगत का ।
सहज सहज मन से तजना ॥ ४ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ावत ।
सतसंग में निस दिन जगना ॥ ५ ॥
मन और सुरत प्रेम रंग भीने ।
शब्द संग घट में रचना ॥ ६ ॥

सतगुरु ने जब दया बिचारी ।
पहुंची जाय सुरत गगना ॥ ७ ॥
वहां से चली अधर में प्यारी ।
राधास्वामी चरन जाय पकना ॥ ८ ॥

चितावनी

॥ शब्द ५३ ॥

कोइ भागे सुरत तज यह संसार ॥टेक॥
या जग में पूरन सुख नाहीं ।
खोज करो तुम निज घर बार ॥ १ ॥
निज घर है ब्रह्मांड के पारा ।
तीन लोक में काल पसार ॥ २ ॥
माया संग दुखी रहें सब जिव ।
कोई न जावे भौ के पार ॥ ३ ॥
सच्चा सुख है संत के देसा ।
याते चलो संत की लार ॥ ४ ॥
सतगुरु कर उन सेवा करना ।
प्रीत प्रतीत चरन में धार ॥ ५ ॥

वे दयाल तोहि भेद बतावें ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ ६ ॥
प्रीत सहित जब करो कमाई ।
तब जावो भौसागर पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करले ।
पावो उनकी मेहर अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

कोइ चेते सुरत जग देख असार ॥टेक॥
बाहरमुख पूजा नहिं भावे ।
यामें जीव भरम रहे झार ॥ १ ॥
करम धरम सब काल पसारा ।
यामें नित बढ़ता अहंकार ॥ २ ॥
सच्चा सतसंग खोजत पाया ।
वहां पाया सच्चा आधार ॥ ३ ॥
सुरत शब्द का भेद अपारा ।
सो सतगुरु दीना कर प्यार ॥ ४ ॥

दया मेहर ले करत कमाई ।
देखत घट में मोक्ष दुआर ॥ ५ ॥
रस पावत मन अति हरखाना ।
मगन हुई सुत सुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
बेग उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

कोइ जाने सुरत गुरु महिमां सार ॥टेक॥
सतसंग करे भाव से गुरु का ।
तन मन से धर प्रेम पियार ॥ १ ॥
सेवा करके लाग बढ़ावे ।
भजन करै नित सुरत सम्हार ॥ २ ॥
निंद्या अस्तुति चित नहिं धारै ।
संतन की यह जुगत बिचार ॥ ३ ॥
इंद्री भोग तजत अब मन से ।
करम भरम को दिया निकार ॥ ४ ॥

चित राखे गुरु चरनन माहीं।
निस दिन पियत अमीं रस सार ॥ ५ ॥
तब सतगुरु परसन्न होय कर।
अंतर में दें पाट उघाड़ ॥ ६ ॥
अद्भुत खेल लखै घट माहीं।
गुरु का अचरज रूप निहार ॥ ७ ॥
तब राधास्वामी की जाने महिमां।
चरनन पर जावे बलिहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

आज मानो सुरत सतगुरु उपदेश ॥टेक॥
दीन अधीन रहो चरनन में।
त्यागो मन से माया लेश ॥ १ ॥
उमंग सहित करो सतसंग आई।
सुनो चित्त से देस संदेस ॥ २ ॥
सुरत लगाओ शब्द अधर से।
सहज तजत चलो यह परदेस ॥ ३ ॥

यह तो देस काल का जानो ।
निज घर तुम्हरा सतगुरु देस ॥ ४ ॥
सदा आनंद बिलास जहां वहां ।
नहिं वहां दुख सुख काल कलेश ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया कुमत को त्यागो ।
सुमत धार धर हंसा भेस ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

कोई धारे गुरू के बचन सम्हार ॥टेक॥
मोह जाल में सब जग फंसिया ।
परमारथ की सुद्ध बिसार ॥ १ ॥
करम करें धर जग की आसा ।
रोग सोग संग रहें बीमार ॥ २ ॥
भरम रहे पिछली टेकन में ।
संत बचन नहिं सुनें गंवार ॥ ३ ॥
कोइ कोइ जीव होयं बड़ भागी ।
संतन से करें प्रीत सम्हार ॥ ४ ॥

सुन सुन बचन चित्त में धारें ।
दीन होय लें जुगती सार ॥ ५ ॥
हित चित से जब करें कमाई ।
अंतर में देखें उजियार ॥ ६ ॥
कर परतीत अब प्रीत बढ़ावें ।
चरन सरन पर तन मन वार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से जबही ।
बेग लगावें बेड़ा पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

कोइ सुनो अधर चढ़ गुरु के बैन ॥टेक॥
संत चरन में रहे लौलीना ।
घट में परखे उनकी कहन ॥ १ ॥
शब्द कमाई करे प्रेम से ।
चित दे समझे घट की सैन ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट कर चालें ।
खोलें चढ़ कर तीसर नैन ॥ ३ ॥

सेत उजास लखे घट माहीं।
धुन घंटा सुन पावे चैन ॥ ४ ॥
जोत फाड़ फिर सुन्न समावे।
बंकनाल धस जावे पैन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी गढ़ अब चढ़ कर पहुंची।
काल करम का छूटा दैन ॥ ६ ॥
हरख सुनत अब धुन ओंकारा।
भोर हुआ और मिट गई रैन ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया पार पद पाया।
सुरत लगी निज घर सुख लैन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

कोइ गावे गुरू की महिमां सार ॥टेक॥
दया धार गुरू जग में आये।
किया जीव उपकार ॥ १ ॥
निज घर का उन भेद सुनाया।
राधास्वामी धाम अगम के पार ॥ २ ॥

घर चालन की जुगत बताई ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ ३ ॥
काल देस से जीव निकारा ।
काट दिया माया का जार ॥ ४ ॥
करम भरम से लिया बचाई ।
चरन सरन दई किरपा धार ॥ ५ ॥
कोट जनम से भटका खाया ।
हुआ नहीं कभी जीव उबार ॥ ६ ॥
जब सतगुरु मोहिं मिले भाग से ।
तबही गई भौसागर पार ॥ ७ ॥
छिन छिन शुकराना करूं उनका ।
राधास्वामी प्यारे पतित उधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६० ॥

आज आई सुरतिया दर्द भरी ॥टेक॥
जगत भोग से होय उदासा ।
त्रिय तापन से अधिक डरी ॥ १ ॥

या जग में कहीं शांत न पाई ।
दुख सुख संसय अगिन जरी ॥ २ ॥

सत पद का कहीं भेद न मिलिया ।
सर्ब मतों में ढूंढ फिरी ॥ ३ ॥

खोजत मिले भाग से सतगुरु ।
सुन सुन बचन उन सरन पड़ी ॥ ४ ॥

सहज जुगत गुरु दीन बताई ।
मन की हुई अब डाल हरी ॥ ५ ॥

सुरत लगी अब चढ़ कर धुन में ।
काल करम घर पड़ी मरी ॥ ६ ॥

धावत गई सुन्न दस द्वारे ।
सुरत गगरिया प्रेम भरी ॥ ७ ॥

सतगुरु चरन परस सतपुर में ।
राधास्वामी से मिल आज तरी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

कोइ गहो गुरू की सरन सम्हार ॥टेक॥

बहु दिन बीते समझ सोच में ।
अब तो दूतन संग तज डार ॥ १ ॥
इंद्रियन संग रहा बहुत दिवाना ।
मत भरमे अब उनकी लार ॥ २ ॥
सतगुरु महिमां कहत सुनत नित ।
मन नहिं माने बड़ा गंवार ॥ ३ ॥
सर्ब समरथ राधास्वामी को कहता ।
हाज़िर नाज़िर कुल्ल करतार ॥ ४ ॥
बरतन में यह समझ न धारे ।
भूले भरमे बारम्बार ॥ ५ ॥
औरों को गुन औगुन धरता ।
निज प्रेरक की सुद्ध न धार ॥ ६ ॥
रूखा फीका होवत छिन में ।
राधास्वामी मौज क्यों दई बिसार ॥ ७ ॥
समझ यही अब मन में धारो ।
राधास्वामी हैं तेरे कुल्ल दातार ॥ ८ ॥
सब घट में हैं वेही प्रेरक ।
उन बिन और न कोइ दरबार ॥ ९ ॥

संत सतगुरू उनको जानो ।
राधास्वामी गुरू हैं अगम अपार ॥१०॥
उन बिन और न कोई करता ।
उनकी रज़ा में चलना यार ॥११॥
जो कुछ करें वही भल मानो ।
मसलहत उनकी वही बिचार ॥१२॥
काज करें तेरा वे हित से ।
काटें काल करम का जार ॥१३॥
तन मन सुरत के वेही सहाई ।
छिन छिन हैं तेरे वे रखवार ॥१४॥
प्रीत करो उन चरनन गहिरी ।
दीन ग़रीबी मन में धार ॥१५॥
राधास्वामी बल हिरदे में धारो ।
मन से और भरोस तज डार ॥१६॥
निरबल नीच जान अपने को ।
राधास्वामी ओटा गहो सम्हार ॥१७॥
दया भाव बरतो जीवन से ।
मान ईरखा देव बिसार ॥१८॥

इस बिध दास रहे जो रहनी।
पावे राधास्वामी दया अपार ॥१९॥
सुरत चढ़े छिन छिन ऊंचे को।
शब्द शब्द पौड़ी चढ़ पार ॥२०॥
राधास्वामी धाम पाय बिसरामा।
मगन होय निज रूप निहार ॥२१॥

॥ शब्द ९२ ॥

आज आई सुरत हिये उमंग बढ़ाय ॥टेक॥
मन इंद्री को रोकत घट में।
गुरु सरूप का ध्यान लगाय ॥ १ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत।
घट में अद्भुत दर्शन पाय ॥ २ ॥
धुन झनकार सुनत मन सरसा।
हिये में प्रीत नवीन जगाय ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करत नित केला।
लीला देख अधिक हरखाय ॥ ४ ॥

गुरु दर्शन की महिमां भारी ।
अचरज सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
तन मन धन वारत चरनन पर ।
मस्त हुई निज आनंद पाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन पाय हुई निरभय ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

आज आई सुरत हिये भाव धार ॥टेक॥
सतसंगियन से हेल मेल कर ।
सतसंग करती चित्त सम्हार ॥ १ ॥
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत ।
गुरु सरूप का ध्यान सम्हार ॥ २ ॥
शब्द सुनत घट में नभ द्वारे ।
मगन होत चढ़ गगन मंझार ॥ ३ ॥
ताल मृदंग बजे सारंगी ।
मुरली बीन सुनी झनकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
मेहर करी पद दीना सार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

कोइ धारो गुरू के चरन हिये ॥ टेक ॥

जग में छाय रहा तम चहुं दिस ।
सब जिंव सहते ताप त्रिये ॥ १ ॥
निकसन की कोइ राह न पावें ।
सब जिव जाता है जम लिये ॥ २ ॥
जिन पर दया हुई धुर घर की ।
वही धारें गुरु शब्द जिये ॥ ३ ॥
गुरु का संग कर मन हुआ निर्मल ।
रस पावत अभ्यास किये ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन पर ।
तन मन धन सब वार दिये ॥ ५ ॥
चरन पकड़ सुर्त चढ़त अधर में ।
मगन होत रस शब्द पिये ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया पार घर पहुंची ।
काल करम सब टार दिये ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

आज आई सुरत हिये प्रेम जगाय ॥टेक॥

दरशन करत भूल गई सुध बुध ।
सुरत रही चरनन अटकाय ॥ १ ॥
मगन हुई सुन धुन झनकारी ।
दृष्ट गई रस रूप भुलाय ॥ २ ॥
ऐसी लीला निरखत निस दिन ।
सुरत और मन ऊंचे को धाय ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई ।
गगन माहिं मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
सारंग मुरली अद्भुत बाजी ।
सतपुर में धुन बीन सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर हुई कारज हुआ पूरा ।
राधास्वामी चरनन गई समाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

आज भींजे सुरत गुरु प्रेम रंग ॥ टेक ॥
उमंग भरी आई सतगुरु चरना ।
बचन सुनत हुई आज निसंक ॥ १ ॥
जग का मोह त्याग दिया मन से ।
दूत थके कर घट में जंग ॥ २ ॥
भोगन से चित हुआ उदासा ।
मन इंद्री सूखे हुए तंग ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन का भाव बढ़त नित ।
और रही नहिं कोई उचंग ॥ ४ ॥
मन हुआ लीन शब्द रस पावत ।
सुरत उड़न लगी जैसे पतंग ॥ ५ ॥
सहसकंवल होय त्रिकुटी धाई ।
जहां गरजे गगन और बजे मृदंग ॥ ६ ॥
सुरत रंगीली चली ऊंचे को ।
छूट गया अब सबही कुसंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी प्रीतम मिले अधर में ।
लिपट रही सुत उमंग उमंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

कोइ करो प्रेम से गुरु का संग ।
मन से कपट और मान तियागो ।
प्रेमी जन का धारो ढंग ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत करो तुम ऐसी ।
जस माता संग पुत्र निसंक ॥ २ ॥
गुरु आज्ञा हित चित से मानो ।
सेवा करो तुम सहित उमंग ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करना ।
राधास्वामी नाम बसै अंग अंग ॥ ४ ॥
मन रहे नित दर्शन रस माता ।
सुरत भींज रहे शब्द के रंग ॥ ५ ॥
जग ब्योहार लगा अब कांचा ।
छोड़ दिया अब नाम और नंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्ट से हेरा ।
बिरोधी हो गये आपहि तंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

कोइ जोड़ो गुरू से नाता आय ॥टेक॥
मात पिता भाई सुत तिरिया ।
इन के संग मन रहा बंधाय ॥ १ ॥
नातेदार मित्र और बिरादरी ।
इन से भी करी प्रीत बनाय ॥ २ ॥
पंडित बैद हकीम महाजन ।
इन से भी हित करता आय ॥ ३ ॥
संत साध और गुरु भक्तन से ।
भाव न लावे निंद्या गाय ॥ ४ ॥
उनकी दया दृष्टि जो पावे ।
भौजल तर जिव घर को जाय ॥ ५ ॥
सब जीवन को चहिये ऐसा ।
जैसें बने तैसे मन समझाय ॥ ६ ॥
संत चरन में सरधा लावें ।
भाव से दर्शन करें बनाय ॥ ७ ॥
वे हैं गुरू सतगुरू आचारज ।
जीव दया उन हृदय समाय ॥ ८ ॥

स्वारथ परमाथ कारज में ।
दया मेहर से करें सहाय ॥ ९ ॥
जम से जीव को लेहिं बचाई ।
मेहर से दें सुख घर पहुंचाय ॥१०॥
याते चेतो समझो भाई ।
सतगुरु चरनन सरधा लाय ॥११॥
राधास्वामी नाम सम्हारो ।
दीन चित्त नित उन गुन गाय ॥१२॥
दुनिया के कारज सब करते ।
परमारथ की सुद्ध न लाय ॥१३॥
यह ग़फ़लत बहु दुख दिखलावे ।
फिर पछतावा काम न आय ॥१४॥
याते अबही चेतो भाई ।
जीव काज अपना करो आय ॥१५॥
थोड़ी बहुत कुछ करो कमाई ।
सरन पड़ो राधास्वामी आय ॥१६॥
तब वे दया करें निज अपनी ।
जीव को तेरे लेहिं बचाय ॥१७॥

॥ शब्द ९९ ॥

कोइ करो गुरू संग हेत सम्हार ॥टेक॥
सांचा मीत गुरू को जानो ।
कपट छोड़ कर उन से प्यार ॥ १ ॥
और सभी स्वारथ के मीता ।
परमारथ का कोई न यार ॥ २ ॥
समझ समझ चलना इस जग में ।
ठगियन से रहना हुशियार ॥ ३ ॥
उमंग सहित करो सतसंग गुरु का ।
बचन सुनो और हिरदय धार ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत धरो उन चरनन ।
सुरत शब्द मारग लो सार ॥ ५ ॥
करो कमाई घट में निस दिन ।
शब्द सुनो निरखो उजियार ॥ ६ ॥
या बिध दिन दिन होत सफ़ाई ।
सुरत चढ़ै फिर घट के पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
अपनी दया से करें जीव उधार ॥८॥

॥ शब्द ७० ॥

आज हुई सुरत गुरु चरन अधीन ॥टेक॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
मन और सुरत हुए दोउ लीन ॥ १ ॥
सहज सहज सुत चढ़त अधर में।
धुन रस गुरू मेहर कर दीन ॥ २ ॥
जगत भाव अब मन से त्यागा।
सुरत हुई गुरु चरनन दीन ॥ ३ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारी।
हारे काल करम गुन तीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन भक्ति हुई गाढ़ी।
सुरत लगी अब जस जल मीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

आज आई सुरतिया उमंग जगाय ॥टेक॥
आरत करन चहत सतगुरु की।
हिये में भाव और प्रेम बढ़ाय ॥ १ ॥

दर्शन करत हरख रही मन में ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ २ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
आनंद अधिक रहा बरसाय ॥ ३ ॥
हरख हरख राधास्वामी गुन गावें ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाय ॥ ४ ॥
चहुं दिस राधास्वामी होत पुकारा ।
पिता प्यारे पिया प्यारे सब मिल गाय ॥ ५ ॥
उमंग उमंग गुरु आरत गावें ।
धूम धाम कुछ बरनी न जाय ॥ ६ ॥
ऐसा समा बंधा इस औसर ।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
सब को दिया निज प्रेम अधिकाय ॥ ८ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीत चरन में ।
काल करम अब रहे मुरझाय ॥ ९ ॥
शब्द धार का भेद जना कर ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ १० ॥

दीन होय सुत लागी चरनन।
राधास्वामी लिया निज गोद बिठाय ॥११॥

॥ शब्द ७२ ॥

जाग री मेरी प्यारी सुरतिया।
गुरु चरनन में लाग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ टेक ॥

भूल भरम में बहु दिन बीते।
अब उठ जग से भाग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ १ ॥

दुर्लभ दर्शन मिले भाग से।
नैन कंवल गुरु ताक री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ २ ॥

तिल अंतर सुर्त जोड़ अधर चढ़।
सुन ले अनहद राग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ३ ॥

सहसकंवल होय धाय गगन पर।
मारी काला नाग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ४॥

सुन्न में जाय हुई अब निर्मल।
छूटी संगत काग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ५॥

राधास्वामी दीनदयाल मेहर से।
दीना तोहि सुहाग री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ६॥

॥ शब्द ७३ ॥

निज़ घर अपने चाल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ टेक॥

माया फैली जग में भारी।
जित जावे तित काल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ १॥

काल कर्म बहु फंद लगाये ।

चहुं दिस फैला जाल री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥

निकसन चाहो तो अबही निकसो ।

चलो गुरू के नाल री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

कोई मीत नहीं है तेरा ।

तजो मोह धन माल री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन ।

वे काटें दख साल री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

सुरत शब्द मारग ले चालो ।

राधास्वामी नाम हिये पाल री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

खेल गुरू संग आज री मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ टेक ॥
उमंग सहित आओ चरनन में ।
भक्ति भाव ले साज री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ १ ॥
दिन दिन हिये में प्रेम बढ़ावो ।
छोड़ो जग का पाज री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धावो ।
तख़्त बैठ कर राज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ३ ॥
सुन्न में हरख मिलो हंसन से ।
मंगल गा और नाच री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ४ ॥
सतगुरु चरन जाय लिपटानी ।
पाया भक्ती दाज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी अंग लगाया मेहर से ।
सिर पर राखा ताज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

करो गुरू संग प्यार री
मेरी भोली सुरतिया ॥ टेक ॥

माया संग जग माहिं फंसानी ।
तीन पांच हुए यार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ १ ॥

भोग दिखाय लुभाया तुझ को ।
काल हुआ बरियार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ २ ॥

होय हुशियार करो सत संगत ।
बचन गुरू हिये धार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ ३ ॥

गुरु से पावो दात प्रेम की ।
चरनन पर बलिहार री ॥ मेरी भोली सुरतिया ॥ ४ ॥

शब्द कमाई करो उमंग से ।
घट में देख बहार री ॥ मेरी भोली सुरतिया ॥ ५ ॥

धुन की डोरी पकड़ अधर चढ़ ।
लखो जाय पद सार री ॥ मेरी भोली सुरतिया ॥ ६ ॥

दया मेहर ले आगे चालो ।
राधास्वामी चरन निहार री ॥ मेरी भोली सुरतिया ॥७॥

॥ शब्द ७६ ॥

आवो गुरु दरबार री
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

जगत अगिन में क्यों तू जलती।
न्हावो सीतल धार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ १॥
सतसंग कर गुरु का हित चित से।
जग भय भाव बिसार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ २॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर।
तन मन चरनन वार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ३॥
नाम दान सतगुरु से लेकर।
करनी करो सम्हार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ४॥
बिमल प्रकाश लखो घट अंतर।
सुन अनहद झनकार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ५॥
राधास्वामी सरन धार हिये अपने।
कर ले जीव उपकार री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ६॥

॥ बचन ११ प्रेम बहार भाग पहिला ॥
बहार

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरू दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥टेक॥
समझ गुरू गत मत अगम अपार ।
धार रही मन में दृढ़ परतीत ॥ १ ॥
गुरू छबि निरख हुआ मन मायल ।
बचन सुनत नित हरखत चीत ॥ २ ॥
उमंग उमंग सेवत गुरु चरना ।
भाव सहित पावत गुरु सीत ॥ ३ ॥
दया मेहर गुरू छिन छिन निरखत ।
दृढ़ कर चरन सरन अब लीत ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति धारा अब जागी ।
त्याग दई मनमुखता रीत ॥ ५ ॥

गुरु को जाना अब सच यारा ।
जग में नहिं कोइ सच्चा मीत ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन अधारी ।
निज घर चाली भौजल जीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

दरस गुरु हियरे उठत उमंग ॥ टेक ॥
बिकल मन नहिं पावत सुख चैन ।
उठावत छिन छिन नई उचंग ॥ १ ॥
तोड़ जग जाल छोड़ ब्योहार ।
करन चाहे कोइ दिन गुरु का संग ॥ २ ॥
तड़प रही निस दिन पिया के बियोग ।
काल नित करत भजन में भंग ॥ ३ ॥
लहर जिय में उठती हरदम ।
गुरू से मिल धारूं उन रंग ॥ ४ ॥
करो प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय ।
बसाओ प्रेम मेरे अंग अंग ॥ ५ ॥

मोह जग मोहिं न ब्यापे आय।
सिखाओ ऐसा भक्ती ढंग ॥ ६ ॥
भींज रहूं प्रेम रंग सारी।
सुरत मेरी उड़े गगन जस चंग ॥ ७ ॥
उमंग कर राधास्वामी बल हिये धार।
छोड़ देउं जग का नाम और नंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मान मद त्याग करो गुरु संग ॥टेक॥
जब लग सजनी मान न छोड़ो।
तब लग रहो तुम तंग ॥ १ ॥
कर्म भर्म जब लग नहिं छूटे।
नहिं धारो गुरु रंग ॥ २ ॥
बैर ईरषा नित्त सतावे।
करत रहो तुम सब से जंग ॥ ३ ॥
याते कहना मान पियारी।
सीखो भक्ती ढंग ॥ ४ ॥

दीन होय गुरु सरनी आओ ।
चित से चेत करो सतसंग ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हालो ।
धुन में सुरत लगाओ उमंग ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करो अस कोइ दिन ।
प्रेम बसे तुम्हरे अंग अंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
होयं करम सब भंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सरन गुरु गहो हिये धर प्यार ॥ टेक ॥
सतसंग करो नित्त तुम आई ।
बचन गुरू सुनो होय हुशियार ॥ १ ॥
मारग का ले भेद गुरू से ।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ २ ॥
गुरु का ध्यान धरो तुम घट में ।
परखत चलो मेहर की धार ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन ।
भोग बासना देव बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री का संग न करना ।
यह भरमावें जग की लार ॥ ५ ॥
मोह जाल में फंसो न भाई ।
गुरुमुख अंग सदा रहो धार ॥ ६ ॥
सर्व समरथ राधास्वामी प्यारे ।
काज करें तेरा दया बिचार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

त्याग चल सजनी माया देस ॥ टेक ॥
तीन लोक में काल बियापा ।
सब जिव भोगें करम कलेश ॥ १ ॥
निकसन की कोइ राह न पावें ।
छोड़ न सकते माया लेस ॥ २ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
बिरथा काहे बितावो बैस ॥ ३ ॥

सतसंग कर उन जुगत कमावो ।
सुरत शब्द का ले उपदेश ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुरु की संग ले ।
सुरत शब्द में करो प्रवेश ॥ ५ ॥
धर परतीत उन सरन सम्हालो ।
काल करम की जाय न पेश ॥ ६ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावो ।
सुरत धरे तब हंसा भेस ॥ ७ ॥
सतपुर जाय काज हुआ पूरन ।
राधास्वामी को अब करूं आदेश ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

पकड़ गुरु चरन चलो भौपार ॥ टेक ॥
यह भौसागर काल अस्थाना ।
माया की बहे परबल धार ॥ १ ॥
करम तरंग उठावत छिन छिन ।
भोग रोग संग जीव बीमार ॥ २ ॥

याते कहूं सुनाय सबन को ।
मत भरमो तुम जग की लार ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो हित चित से ।
जो चाहो सच्चा उद्धार ॥ ४ ॥
दीन होय ले गुरु उपदेशा ।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ ६ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर मन में ।
काटो काल करम का जार ॥ ७ ॥
प्रीत सहित अस करो कमाई ।
राधास्वामी दें तोहिं पार उतार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ ॥

डगर मेरी रोक रहा मन जार ॥ टेक ॥
इंद्रियन संग यह हुआ दिवाना ।
भरम रहा भोगन की लार ॥ १ ॥

नित नई तरंग उठावत छिन छिन ।
जंग में बहावत सूरत धार ॥ २ ॥
समझ बूझ कुछ चित नहिं धारे ।
ढीठ हुआ मन निपट गंवार ॥ ३ ॥
मेरी कहन नेक नहिं माने ।
सरन गहूं सतगुरु दरबार ॥ ४ ॥
जो निज मेहर करें गुरु अपनी ।
तब यह मन हो जावे यार ॥ ५ ॥
परमारथ की रीत समझ कर ।
नित्त कमावे उसकी कार ॥ ६ ॥
उलट जगत से पलटे घट में ।
मगन होय सुन धुन झनकार ॥ ७ ॥
तजत पिंड रस पियत अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

लिपट गुरु चरन प्रेम संग आज ॥टेक॥

उमंग उमंग सतसंग कर उनका ।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ १ ॥
बिरह अनुराग छाय रहा घट में ।
छोड़ दई कुल जगकी लाज ॥ २ ॥
दरशन कर गुरु नैन कंवल तक ।
धुन सुन जाय सुरत नभ भाज ॥ ३ ॥
सेवा करत बढ़त हिये प्रीती ।
त्रिकुटी चढ़ भोगे सुर्त राज ॥ ४ ॥
करत बिलास बिमल हंसन संग ।
मन माया का छोड़ा पाज ॥ ५ ॥
भंवरगुफा पहुंची गुरु लारा ।
सोहंग शब्द रहा जहां गाज ॥ ६ ॥
सत्तनाम सतपुरुष रूप लख ।
प्रेम भक्ति का पाया दाज ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम गई सुर्त सज के ।
आज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जगत तोहि क्यों लागा प्यारा ॥ टेक ॥
निज घर भूल भरम रही जग में ।
करम करत धारत भारा ॥ १ ॥
मन इंद्रियन संग यारी ठानी ।
दुख भोगत भोगन लारा ॥ २ ॥
निकसन की कोइ जुगत न जानी ।
सतसंग नहिं लागा प्यारा ॥ ३ ॥
अब तो चेत समझ तू हे मन ।
सतगुरु बचन हिये धारा ॥ ४ ॥
दीन होय गुरु चरन गहो अब ।
सुरत शब्द मारग धारा ॥ ५ ॥
नित अभ्यास करो हित चित से ।
जग से होय छिन छिन न्यारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन धार दृढ़ हिये में ।
तुरत करें भौजल पारा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

चरन गह जग से हुई न्यारी ॥ टेक ॥
उमंग सहित गुरु सन्मुख आई ।
बचन सुनत हिये गुलज़ारी ॥ १ ॥
दर्शन करत फूल रही मन में ।
ध्यान धरत खिली फुलवारी ॥ २ ॥
मगन हुई ले शब्द उपदेशा ।
सुनत रही घट झनकारी ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन ।
तन मन धन गुरु पै वारी ॥ ४ ॥
शब्द कमाई करत उमंग से ।
चरन सरन गुरु हिये धारी ॥ ५ ॥
नित्त नवीन बिलास निरख घट ।
जग भय भाव तजत सारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया चढ़त नित घट में ।
सुरत गई भौजल पारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरु क्यों नहिं धारे प्रीत ॥ टेक ॥
होय अनजान फंसा जग मांहीं ।
मन माया की धारी रीत ॥ १ ॥
दुख सुख में भरमत रहे निस दिन ।
काल करम की ऐसी नीत ॥ २ ॥
ताते प्यारे मैं समझाऊं ।
सतसंग बचन सुनो धर चीत ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में लाग बढ़ावो ।
जुगत कमावो धर परतीत ॥ ४ ॥
करम काट निज घर पहुंचावें ।
शब्द सुनावें अगम अजीत ॥ ५ ॥
मन माया से पीछा छूटे ।
सतगुरु चरनन रहो मिलीत ॥ ६ ॥
सोता भाग बड़ा अब जागा ।
मिल गया राधास्वामी धाम पुनीत ॥७॥

॥ शब्द १२ ॥

चेत कर क्यों न चलो गुरु साथ ॥टेक॥
मन माया संग रहे बंधानी ।
भोगन में अति कर दुख पात ॥ १ ॥
जगत बासना तपन उठावत ।
कर्मन में रहे नित भरमात ॥ २ ॥
जनम मरन का फेर न छूटे ।
चौरासी में ग़ोते खात ॥ ३ ॥
सतगुरु बचन सुनो चित देकर ।
प्रीत सहित उन जुगत कमात ॥ ४ ॥
रस पावे घट में कोइ दिन में ।
धीरे धीरे लगन बढ़ात ॥ ५ ॥
मन और सुरत चेत कर चालें ।
धुन डोरी गह अधर चढ़ात ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
सरन धार उन चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सजन प्यारे मन की कहन न मान ॥टेक॥
यह जग में तोहि बहु भरमावे ।
गुरु भक्ती में करता हान ॥ १ ॥
डावां डोल रखे तेरे चित को ।
दुख सुख चिंता संग भुलान ॥ २ ॥
कारज मात्र रखो जग आसा ।
मान ईरषा तजो निदान ॥ ३ ॥
गहिरी प्रीत करो गुरु चरनन ।
सुरत शब्द में नित्त लगान ॥ ४ ॥
गुरु का भय और भाव बसावो ।
गुरु सरूप का धारो ध्यान ॥ ५ ॥
सहज २ तब मन बस आवे ।
दीन ग़रीबी चित्त बसान ॥ ६ ॥
सुरत रंगीली प्रेम सिंगारी ।
चढ़े अधर करे अमृत पान ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी ।
चरनन में दें ठौर ठिकान ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी ॥टेक॥
यह तो देस तुम्हारा नाहीं ।
भोगन संग यहां भटकी ॥ १ ॥
मन इंद्री का संग तियागो ।
सुरत करो अब सुन तट की ॥ २ ॥
गुरु दयाल से ले उपदेशा ।
धुन संग सुरत रहे लटकी ॥ ३ ॥
झांको चढ़ कर गगन अटारी ।
करमन की फूटे मटकी ॥ ४ ॥
गुरु पद परस मगन होय चित में ।
वहां से सुरत अधर सटकी ॥ ५ ॥
गुरु दयाल बिन कौन करावे ।
यह करनी अब निज घट की ॥ ६ ॥
काल करम से खूंट छुड़ाया ।
माया ममता दई पटकी ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई ।
खबर जनाई मोहिं धुर पट की ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सजन प्यारे जड़ सँग गांठी खोल ॥टेक॥

दीन होय सतसंग कर गुरु का ।

लौ लगाय सुन घट में बोल ॥ १ ॥

मन और सुरत खिलें धुन सुन कर ।

सुफल होय नर देह अमोल ॥ २ ॥

दिन दिन घट में आनंद पावे ।

माया की छूटे सब चौल ॥ ३ ॥

तब सतसंग की महिमां जाने ।

सतगुरु बचन सही कर तोल ॥ ४ ॥

राधास्वामी सरन धार सुत प्यारी ।

चढ़ कर झूले गगन हिंडोल ॥ ५ ॥

अधर चढ़त सतगुरु गुन गावत ।

पाय गई सतशब्द अतोल ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया मिला पद सारा ।

अकहं अपार अनाम अडोल ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सुरत प्यारी मन संग क्यों भरमाय॥टेक॥
कर्म धर्म और तीरथ मन्दिर ।
काल दिया अस जाल बिछाय ॥ १ ॥
इस में जीव घेर लिये सारे ।
निज घर की कोइ राह न पाय ॥ २ ॥
मन मूरख इंद्रियन संग बंधा ।
भोगन में रहे नित्त भुलाय ॥ ३ ॥
छोड़ भोग और तोड़ जाल को ।
सतसंग सतगुरु करो बनाय ॥ ४ ॥
बचन सुनो उन देकर काना ।
सुरत शब्द की कार कमाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत करो उन चरनन ।
सेवा करो नित भाव जगाय ॥ ६ ॥
मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
काल कर्म का फंदा काटें ।
रस पावे सूरत घर जाय ॥ ८ ॥

जो यह काम करो नहिं अबही ।
दुख भोगो फिर २ पछताय ॥ ९ ॥
ताते अबही कहना मानो ।
सतगुरु संग चलो घर धाय ॥१०॥
राधास्वामी सरन गहो हित चित से ।
मेहर से दें सब काज बनाय ॥११॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरत प्यारी मन से यारी तोड़ ॥टेक॥
इसकी प्रीत बहुत दुख देवे ।
जैसे बने इस का संग छोड़ ॥ १ ॥
भोगन में यह नित भरमावे ।
काल कर्म का बाढ़े ज़ोर ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसंग ।
दीन होय चित चरनन जोड़ ॥ ३ ॥
भाव सहित ले शब्द उपदेशा ।
घट में सुन नित अनहद घोर ॥ ४ ॥

प्रीत सहित गुरु रूप धियावो ।
भागें घट के सबही चोर ॥ ५ ॥
दर्शन पाय मगन होय मन में ।
उमंग चढ़े सुर्त घट में दौड ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर दृष्टि करें जबही ।
छूटै छिन में मोर और तोर ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरत प्यारी झांको घट में आय ॥टेक॥
नैनन माहिं डगर निज घर की ।
धुन संग चालो सुरत लगाय ॥ १ ॥
भर्म रही जुग २ बाहरमुख ।
तन मन संग नित दुख सुख पाय ॥ २ ॥
अब के चेत लखो घट भेदा ।
नरदेही को सुफल कराय ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो धर प्यारा ।
शब्द जुगत ले नित्त कमाय ॥ ४ ॥

जैसे बने तैसे सरनी आवो ।
राधास्वामी दें तेरा भाग जगाय ॥५॥
मन और सुरत चढ़ें धुन सुन कर ।
घट में अद्भुत खेल दिखाय ॥ ६ ॥
काल हद्द से परे चढ़ा कर ।
राधास्वामी दें निज घर पहुंचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अधर चढ़ सुनो शब्द की गाज ॥टेक॥
शब्द धार घट में नित जारी ।
उमंग सहित सुनो चित दे आज ॥ १ ॥
बिन गुरु घट में राह न पावे ।
मिल उन से कर अपना काज ॥ २ ॥
सतसंग कर सेवा कर उनकी ।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ ३ ॥
दीन होय रल मिल सतसंग में ।
साधन का जहां जुड़ा समाज ॥ ४ ॥

कर्म भर्म तज कर गुरू आरत ।
जग का छोड़ो भय और लाज ॥ ५ ॥
दया करें गुरू सुरत चढ़ावें ।
प्रेम भक्ति का दे कर दाज ॥ ६ ॥
काल देश तज सतपुर जावे ।
अगम लोक चढ़ भोगे राज ॥ ७ ॥
राधास्वामी दरस पाय हरखानी ।
दया मेहर का पहरा ताज ॥ ८ ॥

॥ शब्द २० ॥

सत्त पद खोज मिलो घट आय ॥टेक॥
माया ने जो रचना कीन्ही ।
उपजे बिनसे थिर न रहाय ॥ १ ॥
सतपद है महासुन्न के पारा ।
संतन किया जहां बासा जाय ॥ २ ॥
सतपुर और राधास्वामी धामा ।
महिमां उनकी कही न जाय ॥ ३ ॥

यह घट भेद मिले सतगुरु से ।
सतसंग कर उन सरन समाय ॥ ४ ॥
दीन चित्त होय ले उपदेशा ।
शब्द जुगत रहो नित्त कमाय ॥ ५ ॥
दया मेहर से सुरत चढ़ावें ।
भौसागर के पार पराय ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम बसै जाय प्यारी ।
अमर होय पर्म आनंद पाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अधर चढ़ परख शब्द की धार ॥टेक॥
गुरु दयाल तोहिं मरम लखावें ।
बचन सुनो उन हिये धर प्यार ॥ १ ॥
बिरह अंग ले कर अभ्यासा ।
खोज करो तुम घट धुन सार ॥ २ ॥
गुरु सरूप को अगुआ करके ।
धुन सुन चलो कंज के पार ॥ ३ ॥

सहसकंवल में घंटा बाजे।
गगन माहिं सुन धुन ओंकार ॥ ४ ॥
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न पर।
भंवरगुफा मुरली झनकार ॥ ५ ॥
सत्त शब्द का धर कर ध्याना।
सत्तलोक धुन बीन सम्हार ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार निशाना।
राधास्वामी प्यारे का कर दीदार ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

दीन दिल आई सुरत गुरु पास ॥टेक॥
दरशन करत फूल रही मन में।
बचन सुनत हिये होत हुलास ॥ १ ॥
सतसंग करत प्रीत नई जागी।
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वास ॥ २ ॥
सुरत शब्द का भेद अमोला।
पाय दया गुरु हुई निज दास ॥ ३ ॥

मन और सुरत लगे अब घट में ।
धुन संग करते नित्त बिलास ॥ ४ ॥
सतगुरु महिमां कस कहुं गाई ।
दूर किये सब जम के त्रास ॥ ५ ॥
करम भरम और संसय सोगा ।
काट दिये दिया चरनन बास ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल परम गुरु दाता ।
पूरन करी मेरे मन की आस ॥ ७ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सरन गुरु आई सुरत धर प्यार ॥टेक॥
दुखित होय जग से अलसानी ।
छोड़ दई मन जम की कार ॥ १ ॥
जग जीवन संग प्रीत घटावत ।
गुरु को जाना अब सच यार ॥ २ ॥
प्रेमी जन संग हेल मेल कर ।
सतसंग गुरु का करत सम्हार ॥ ३ ॥

बचन सुनत हिये प्यार बढ़ावत ।
सेव करत मन तज अहंकार ॥ ४ ॥
प्रीत सहित ध्यावत गुरु रूपा ।
उमंग सहित सुनती धुन सार ॥ ५ ॥
घट में निरख नवीन बिलासा ।
परख रही गुरु मेहर अपार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन परस घर आई ।
गावत उन गुन बारम्बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

भाव धर करत सुरत गुरु सेव ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न सांचा ।
याते सरन गही गुरु देव ॥ १ ॥
दूर करें गुरु अपनी मेहर से ।
संसे भरम और अहमेव ॥ २ ॥
मैं अति दीन नीच करमन की ।
हे गुरु चरन सरन मोहिं देव ॥ ३ ॥

भौजल धार बहे अत गहिरी ।
तुम बिन को मेरी नइया खेव ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल बचाय काल से ।
मोहि निरबल अपना कर लेव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

उमंग कर धरत सुरत गुरु ध्यान ॥टेक॥
गुरु छबि देख मगन हुई मन में ।
निरख रही उन अचरज प्रान ॥ १ ॥
प्रीत बढ़त छिन छिन चरनन में ।
त्याग दिये सब मन के मान ॥ २ ॥
नित नई सेव करत अब गुरु की ।
चरनन पर जाती क़ुरबान ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन पर बल बल जावत ।
छिन छिन वारत तन मन प्रान ॥ ४ ॥
राधास्वामी २ गावत हरदम ।
प्रेम भक्ति का पाया दान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

अधर चढ़ सुनी सरस धुन कान ॥टेक॥
मन और सुरत साध कर तन में।
सम चित होय धरा गुरु ध्यान ॥ १ ॥
मोह राग जग भोग निकारा।
तोड़ दिये सब मन के मान ॥ २ ॥
घंटा संख रहे बज नभ में।
काल पुरुष का जहां दीवान ॥ ३ ॥
जगमग होत जोत उजियारा।
तिस पर सूरज लाल दिखान ॥ ४ ॥
सुन्न में जा धोये सब कल मल।
मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान ॥ ५ ॥
वहां से भी फिर आगे चाली।
सतपुर सुनी बीन धुन आन ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष की आज्ञा लेकर।
राधास्वामी धाम बसान ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

आज घिर आये बादल कारे ।
गरज गरज घन गगन पुकारे ॥ १ ॥
रिम झिम बरसत बूंद अमीं की ।
बिजली चमक घट नैन निहारे ॥ २ ॥
चहुं दिस बरखा होवत भारी ।
भींज रही स्रुत सुन झनकारे ॥ ३ ॥
उमंग उमंग स्रुत चढ़त अधर में ।
निरख रही घट जोत उजारे ॥ ४ ॥
घंटा संख धूम अब डाली ।
बंकनाल धस हो गई पारे ॥ ५ ॥
गुरु दरशन कर अति हरखानी ।
पहुंची जाय सुन दस द्वारे ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर ।
राधास्वामी अचरज दरस निहारे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २८ ॥

आज बरसत रिम झिम मेघा कारे ॥ टेक ॥

क़ोयल मोर बोल रहे बन में।
पपिया टेरत पिउ पिउ प्यारे ॥ १ ॥
सुन सुन बोल बिकल सुत बिरहिन।
तड़पत बिन पिया दरस अधारे ॥ २ ॥
पिया प्यारे बसें मेरे देस अधर में।
मैं तो पड़ी मृतु देस उजाड़े ॥ ३ ॥
कासे कहूं बिपत मैं जिय की।
बिन गुरु कौन करे निरवारे ॥ ४ ॥
संत रूप धर राधास्वामी प्यारे।
आन मिले मोहिं लीन मिलारे ॥ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सुरत प्यारी झूलत आज हिंडोल ॥टेक॥
सतगुरु प्रीतम आप झुलावें।
गरज गगन अनहद धुन बोल ॥ १ ॥
सखी सहेली जुड़ मिल गावें।
राधास्वामी महिमा अगम अतोल ॥ २ ॥

अद्भुत सोभा राधास्वामी धारी ।
सकल सभा रही देख अडोल ॥ ३ ॥
मैं बड़ भाग कहूं क्या अपना ।
राधास्वामी कीनी मेरी सुरत अनमोल॥४॥
राधास्वामी आरत सब मिल धारी ।
सुफल हुई नर देह अमोल ॥ ५ ॥
राधास्वामी गत मत अति कर भारी ।
कौन कहे उन महिमां खोल ॥ ६ ॥

॥ बचन ११ प्रेम बहार भाग दूसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

सुरत मेरी प्यारे के चरनन पड़ी ॥टेक॥
जगे भाग गुरु सन्मुख आई ।
त्रिय तापन से अधिक डरी ॥ १ ॥
राधास्वामी छबि निरखत मन मोहा ।
सेवा में रहूं नित्त खड़ी ॥ २ ॥
प्रीत बढ़त छिन छिन अब घट में ।
माया ममता सकल जरी ॥ ३ ॥
धुन रस पाय हुई मतवाली ।
शब्दन की अब लगी झड़ी ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमां कस कह गाऊं ।
चरन सरन गह आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीत गुरु चरनन काहें न लाय ॥ टेक ॥

मन माया के संग लिपटाना ।
भोगन में रहा चित लुभाय ॥ १ ॥
नर देही की सार न जानी ।
फिर औसर ऐसा नहिं पाय ॥ २ ॥
याते अबही समझो चेतो ।
साध संग करो मन हुलसाय ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले करो कमाई ।
धुन संग मन और सुरत चढ़ाय ॥ ४ ॥
दिन दिन आनंद घट में पावो ।
लो अस अपना भाग जगाय ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीन दयाल कृपाला ।
इक दिन दें तोहिं पार लगाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दरस गुरु मनुआ क्यों न खिले ॥ टेक ॥
धुन हरदम तेरे घट में होती ।
भेद पाय घर क्यों न चले ॥ १ ॥

प्रीत बिना कुछ काज न होई ।
गुरु सतसंग में क्यों न रले ॥ २ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
गुरु सेवा में क्यों न पिले ॥ ३ ॥
निरमल निश्चल चित होय तेरा ।
शब्द संग घट घाट खुले ॥ ४ ॥
चरन सरन गह राधास्वामी ध्यावो ।
मेहर होय निज धाम मिले ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज मेरे मनुआं गुरु संग चल ॥टेक॥
उमंग सहित दरशन कर गुरु का ।
दीन होय सतसंग में रल ॥ १ ॥
गुरु सरूप का ध्यान सम्हारो ।
राधास्वामी नाम जपो पल पल ॥ २ ॥
मन बैरी से जीती बाज़ी ।
धार हिये में गुरु का बल ॥ ३ ॥

काल करम की पेश न जावे ।
मार निकालो माया दल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें ।
दूर करावें सब कलमल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

चरन गुरू तन मन क्यों नहिं देत ॥टेक॥
प्रीत लाय नित करो साध संग ।
गुरु के बचन सुनो कर हेत ॥ १ ॥
मन इंद्रियन संग रहा भुलाई ।
भोगन में सुख छिन छिन लेत ॥ २ ॥
इंद्री भोग रोग सम जानो ।
इन का संग तज चित से चेत ॥ ३ ॥
घट में निस दिन करो कमाई ।
सुरत शब्द संग मन को रेत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
श्याम तजत पद पावे सेत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

चरन गुरु मनुआं काहे न दीन ॥टेक॥
जग संग रह क्या करी कमाई ।
जीव काज कोइ जतन न कीन ॥ १ ॥
धन सम्पत संग रहा अभिमानी ।
पुन्न और पाप भार सिर लीन ॥ २ ॥
सोच करो और समझ सम्हारो ।
सरन गहो गुरु होय अधीन ॥ ३ ॥
धुन की धार पकड़ निज घट में ।
सुरत चढ़ावो जस जल मीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सतपुर जाय सुनो धुन बीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जगत संग मनुआं सदा मलीन ॥टेक॥
काम क्रोध मद नित भरमावें ।
कुमत साथ करे किरत कमीन ॥ १ ॥

तिरिया सुत धन मोह फंसाना ।
जगत बड़ाई में चित दीन ॥ २ ॥
भोगन में रहे सदा अधीना ।
निज करता की सुद्ध न लीन ॥ ३ ॥
अपनी मौत की याद न लावे ।
पाप पुन्न में भेद न कीन ॥ ४ ॥
फल पावे नित दुख सुख भोगे ।
घर जाने की बाट न चीन ॥ ५ ॥
सतगुरु खोज भेद ले घर का ।
जुगत कमावो धार यक़ीन ॥ ६ ॥
प्रेम अंग ले लागो घट में ।
सुरत चढ़ा पियो सार अमीं ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
भौ सागर से सहज तरीन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु प्रानी क्यों नहिं ले ॥टेक॥

माया संग रहा बहुत भुलाना ।
सतसंग में अब चित दे रे ॥ १ ॥
भाव सहित गुरु सेवा धारो ।
चरनन में तन मन धन दे ॥ २ ॥
सतगुरु रूप ध्यान हिये धारो ।
छिन छिन दूर हटो जग से ॥ ३ ॥
शब्द संग सुत गगन चढ़ावो ।
दाग छुटैं तब कल मल के ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
पार उतारें भौजल से ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

चरन गुरु हिये में रही बसाय ॥टेक॥
जग की आस बासना त्यागी ।
सतसंगत में रही चित लाय ॥ १ ॥
गुरु के बचन अमीं की धारा ।
उमंग सहित नित पियत अघाय ॥ २ ॥

शब्द संग नित करत अभ्यासा ।
रस पावत सुत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥
दया मेहर कुछ बरनी न जाई ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमां किस बिध गाऊं ।
मुझ अनाथ को लिया अपनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

दरस गुरु निस दिन करना सही ॥टेक॥

जो तन से गुरु संग न पावे ।
ध्यान धार चित चरन पई ॥ १ ॥
निरमल होय चित गुरु रंग भींजे ।
घट में नित आनंद लई ॥ २ ॥
मन और सुरत उमंग कर घट में ।
चढ़त अधर धुन डोर गही ॥ ३ ॥
अस गुरु दया परख कर घट में ।
जागी प्रीत प्रतीत नई ॥ ४ ॥

राधास्वामी परम गुरू सुख दाता ।
निज चरनन की सरन दई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरु मनुआं हो जावो दीन ॥टेक॥
भोगन में क्यों उमर गवाँता ।
बल पौरुष नित होते छीन ॥ १ ॥
बिन गुरु चरन ठिकाना नाहीं ।
मायासंग नित रहत मलीन ॥ २ ॥
छोड़ उपाध रलो सतसंग में ।
चरन पकड़ सतगुरू परबीन ॥ ३ ॥
गुरु दयाल जो दया बिचारें ।
निरमल करें मन सुरत अलीन ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे अधर चढ़ावें ।
राधास्वामी चरनन जाय बसीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ध्यान गुरू हिये में धरना ज़रूर ॥टेक॥

मन और सुरत सिमट रस पावें।
देख रही सत नूर ॥ १ ॥
नभ की ओर चढ़त सुत बिरहन।
बाजे जहां नित अनहद तूर ॥ २ ॥
करम धरम सब भरम पसारा।
देखा जग परमारथ कूड़ ॥ ३ ॥
दया हुई काटा जम जाला।
निरभय हुआ घट में मन सूर ॥ ४ ॥
चरन सरन गह बैठी सूरत।
राधास्वामी कीना कारज पूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

धार नर देह किया क्या आय ॥टेक॥

सत करतार का मरम न चीन्हा।
मन माया संग रहा लिपटाय ॥ १ ॥
धन और मान भोग आधीना।
कुटम्ब संग नित प्यार बढ़ाय ॥ २ ॥

दुरलभ औसर बाद गंवावत।
जीव काज की सुध नहिं लाय ॥ ३॥
भूल भरम तज चेत पियारे।
सतसंग करो नित्त तुम आय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह अबकी।
जस तस अपना काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज गुरु सतसंग क्यों न करै ॥टेक॥
नर देह पाय रहै क्यों भूला ।
बचन चित्त में क्यों न धरै ॥ १ ॥
सरन धार कर शब्द अभ्यासा।
भौं सागर से आज तरै ॥ २ ॥
मन इंद्रियन संग सहजहि छूटै ।
माया ममता सकल जरै ॥ ३ ॥
घट में निरखै बिमल बिलासा।
शब्द डोर गह सुरत चढ़ै ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया भरोस हिये धर ।
पिंड ब्रह्मंड के पार पड़ें ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

आज मन मित्रा भक्ति कमाय ॥टेक॥
जगत संग कुछ लाभ न पावे ।
दुख सुख में क्यों बैस बिताय ॥ १ ॥
अटक भटक तज कर गुरु संगा ।
बचन सुनो उन चित दे आय ॥ २ ॥
स्वारथ के संगी सब जानो ।
गुरु सम हितकारी नहिं पाय ॥ ३ ॥
घर की राह जुगत चलने की ।
मेहर से दें तोहि भेद जनाय ॥ ४ ॥
सुन उन बचन मान उन कहना ।
घट में धुन संग सुरत लगाय ॥ ५ ॥
चरन सरन गह पार सिधारो ।
राधास्वामी २ निस दिन गाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

बचन गुरू मनुआं लो आज मान ॥टेक॥
संसारी जीवन का संग कर ।
क्यों तू गुरू से धरता मान ॥ १ ॥
जो तू प्यारे मान न छोड़े ।
परमारथ की होवे हान ॥ २ ॥
याते चेतो समझो भाई ।
दीन होय गुरू सन्मुख आन ॥ ३ ॥
दया करें निज बचन सुनावें ।
हिये में प्रीत प्रतीत बसान ॥ ४ ॥
जुगत बता अभ्यास करावें ।
घट में धुन संग सुरत लगान ॥ ५ ॥
चरन सरन दे अधर चढ़ावें ।
राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरत मेरी गुरू संग हुई निहाल ॥टेक॥

प्रीत प्रतीत दई चरनन में ।
गुरु ने लिया मोहिं आप सम्हाल ॥ १ ॥
कर सतसंग बुद्ध हुई निरमल ।
कर्म भर्म दिये आज निकाल ॥ २ ॥
उमंग सहित लागूं घट धुन में ।
ध्याऊं सतगुरु रूप बिशाल ॥ ३ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊं ।
हार रहा अब काल कराल ॥ ४ ॥
घट में निरखूं बिमल बिलासा ।
बचन सुनूं नित अजब रसाल ॥ ५ ॥
चरन सरन गह हुई निचिंती ।
राधास्वामी प्यारे हुए दयाल ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सजन संग मनुआं कर आज प्रीत ॥टेक॥
छोड़ कुसंग करो सतसंगा ।
भक्ति भाव की धारो रीत ॥ १ ॥

गुरु संग निस दिन नेह बढ़ावो ।
बचन सुनो हिये धर परतीत ॥ २ ॥
उमंग सहित कर घट अभ्यासा ।
शब्द पकड़ घर जावो मीत ॥ ३ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने ।
काल करम की तोड़ो नीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें ।
जावो निज घर भौजल जीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आज चलो मनुआं घर की ओर ॥टेक॥
निज घर का ले भेद गुरू से ।
जल्दी चालो घट में दौड़ ॥ १ ॥
तन मन इंद्री सुरत समेटो ।
भोगन से अब नाता तोड़ ॥ २ ॥
धर परतीत धरो गुरु ध्याना ।
काल करम का टूटे ज़ोर ॥ ३ ॥

मन और सूरत अधर चढ़ावो।
शब्दन का जहां हो रहा शोर ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समावो।
घट के सबही परदे फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

जगत भय लज्या तज देव मीत ॥टेक॥
कपट छोड़ कर सतसंग गुरु का।
धारो मन में गुरु की नीत ॥ १ ॥
जग जीवन संग हेत न करना।
गुरु चरनन में लावो प्रीत ॥ २ ॥
चरन सरन गह जुगत कमावो।
राधास्वामी की धर हिये परतीत ॥ ३ ॥
प्रेमी जन से हेल मेल कर।
सीखो भक्ती ढंग और रीत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत धारो।
राधास्वामी चरन बसावो चीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

हाल जग देखो दृष्टी खोल ॥टेक॥
सब जग जात चला छिन छिन में।
कोई बस्तु यहां नहीं अडोल ॥ १ ॥
याते निज घर बाट सम्हालो।
सुन सुन घट में अनहद बोल ॥ २ ॥
गुरु से भेद राह का पावो।
चलने की लो जुगत अमोल ॥ ३ ॥
प्रेम अंग ले सुरत चढ़ावो।
माया को अब डालो रोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
सहज चलो धुर धाम अबोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जांच कर त्यागो भोग असार ॥टेक॥
माया ने सब भोग रचाये।
अमृत संग मिलाया खार ॥ १ ॥

जीव अजान फंसे आय उन में।
फिर फिर भरमें जग की लार ॥ २ ॥
बिमल प्रेम रस चाखा चाहो।
सतगुरु संग करो धर प्यार ॥ ३ ॥
शब्द जुगत ले सुरत चढ़ावो।
मन इँद्रियन को रोको झाड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से।
सहज उतारें भौजल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥ टेक ॥
दुखी होय हट कर या जग से।
गुरु सतसंग में आन अड़ी ॥ १ ॥
मगन होय धारी गुरु जुगती।
तीसर तिल में सुरत भरी ॥ २ ॥
शब्द संग नित करे बिलासा।
करम भरम से आज टरी ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्ट अब कीन्ही ।
चरन सरन गह आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

परख कर छोड़ो माया धार ॥टेक॥
भोगन का इन जाल बिछाया ।
जीव बहे सब उनकी लार ॥ १ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।
उनकी ओटा गहो सम्हार ॥ २ ॥
सतसंग कर धारो उन ध्याना ।
हिरदे में उन रूप निहार ॥ ३ ॥
पुष्ट होय चालें मन सूरत ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसावो ।
मेहर से लेवें जीव उबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरू संग चलना घर की बाट ॥ टेक ॥
बिन सतगुरु कोइ पार न जावे ।
भौसागर का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
बचन सुनो उन समझ सम्हारो ।
करम भरम सब जड़ से काट ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले करो कमाई ।
तब छूटे यह औघट घाट ॥ ३ ॥
ऐसा औसर फिर नहिं पावे ।
अब सौदा कर सतगुरु हाट ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया से सुरत चढ़ावें ।
खोलें घट का बज्र कपाट ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

छोड़ चल सजनी माया धाम ॥ टेक ॥
निज घर तेरा संत के देसा ।
भाग चलो तज क्रोध और काम ॥ १ ॥

संत चरन में धार पिरीती ।
भेद लेव उनसे निज नाम ॥ २ ॥
सुरत सम्हार सुनो धुन घट में ।
पियो अमीं रस जाम ॥ ३ ॥
गुरू की दया ले अधर चढ़ावो ।
पहुंचो त्रिकुटी धाम ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पार उतारें ।
निज घर में देवें बिस्राम ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरू संग प्रीत करो मेरे बीर ॥ टेक ॥
निज घर भेद गुरू बतलावें ।
बाट चलो उन संग धर धीर ॥ १ ॥
सुरत शब्द बिन जाय न पारा ।
और सकल झूठी तदबीर ॥ २ ॥
धर परतीत कमावो जुगती ।
दूर हटै तब तन मन पीर ॥ ३ ॥

सुन सुन धुन सुर्त अधर सिधारे ।
पहुंचे जाय सरोवर तीर ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सतपुर में ।
पाया पद अति गहिर गंभीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

भाव संग गुरू दर्शन कीजे ॥ टेक ॥

जो मन में रहे कपट समाना ।
प्रेम रंग नहिं सुर्त भीजे ॥ १ ॥
काम त्याग सत भक्ति कमावो ।
प्रेम दान गुरू से लीजे ॥ २ ॥
मन और सुरत चढ़ें अस्माना ।
माया बल छिन छिन छीजे ॥ ३ ॥
गुरू की मेहर परख हिये अंतर ।
चरनन में तन मन दीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम की सोभा भारी ।
निरख निरख सूरत रीझे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

प्रीत संग गुरु सेवा धारो ॥ टेक ॥
अचरज भाग जगा गुरु भेंटे ।
चरनन पर तन मन वारो ॥ १ ॥
बचन सुनो और दरस निहारो ।
करम भरम सबही टारो ॥ २ ॥
प्रीत सहित गुरु ध्यान सम्हारो ।
घट में लो आनंद भारी ॥ ३ ॥
शब्द संग सुर्त गगन चढ़ावो ।
काल जाल छिन में जारो ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में ।
उतर जाव भौजल पारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

भाव संग पकड़ गुरू चरना ॥ टेक ॥
काल करम तोहि नित भरमावें ।
छुटै न चौरासी फिरना ॥ १ ॥

अब के दाव पड़ा तेरा सजनी ।
भटक छोड़ गह गुरु सरना ॥ २ ॥
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें ।
सुन सुन धुन घट में चढ़ना ॥ ३ ॥
घंटा संख सुने जाय नभ में ।
वहां से सुरत गगन भरना ॥ ४ ॥
सतगुरु दया गई दस द्वारे ।
हंसन संग केल करना ॥ ५ ॥
सत्तपुर्ष का दर्शन कर के ।
राधास्वामी चरन सुरत धरना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

प्रीत संग गहो गुरू सरना ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न तेरा ।
सकल संग चित से तजना ॥ १ ॥
बुध बिचार सब धोखा जानो ।
मन इंद्री संग दुख सहना ॥ २ ॥

सतगुरु हैं सच्चे हितकारी ।
उन संग भौसागर तरना ॥ ३ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा ।
मन और सुरत अधर भरना ॥ ४ ॥
गुरु सतगुरु पद परस उमंग कर ।
राधास्वामी चरन सीस धरना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

प्रेम बिन चले न घर की चाल ॥ टेक ॥
सतसंग करे समझ तब आवे ।
गुरु चरनन में प्रीत सम्हाल ॥ १ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हारे ।
छोड़े जग की चाल और ढाल ॥ २ ॥
गुरु सरूप का धारे ध्याना ।
शब्द सुने तज माया ख्याल ॥ ३ ॥
घट में देखे बिमल प्रकाशा ।
मगन होय सुन शब्द रसाल ॥ ४ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़े तब दिन दिन ।
पावे राधास्वामी दरस बिशाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

आज घट बरखा रिमझिम होत ॥ टेक ॥
प्रेम के मेघा छाय रहे ।
धुनन का खुल गया भारी सोत ॥ १ ॥
सुरत मन भींजत हुए निहाल ।
लखा उजियारा जगमग जोत ॥ २ ॥
गरज धुन सुन सुर्त चली आगे ।
गगन में जाय मैल मन धोत ॥ ३ ॥
काल अब थक रहा करत पुकार ।
रही अब माया सिर धुन रोत ॥ ४ ॥
करी मो पै राधास्वामी दया अपार ।
सुरत अब सत्त शब्द संग पोत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मान तज प्यारी गुरु से मिल ॥ टेक ॥

दीन होय गिर गुरु चरनन में ।
शब्द भेद ले झांको तिल ॥ १ ॥
सेवा कर हिये प्रेम बढ़ावो ।
जग से मोड़ लगावो दिल ॥ २ ॥
दरस पाय सुर्त अधर चढ़ावो ।
गुरु बल तोड़ चलो सिल सिल ॥ ३ ॥
काल करम का बल सब टूटे ।
माया की छूटे किल किल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
पहुंचावें तोहि धुर मंज़िल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

द्वार घट झांको बिरह जगाय ॥ टेक ॥
यह तो देस बिगाना जानी ।
निज घर की गई सुद्ध भुलाय ॥ १ ॥
मन इंद्री संग तन में बंधिया ।
भोगन संग रही भरमाय ॥ २ ॥

काल पुर्ष यह जाल बिछाया ।
जीव अनाड़ी फांस फंसाय ॥ ३ ॥

जो जिव संत सरन में आवें ।
उनको जम से लेहैं बचाय ॥ ४ ॥

सुरत शब्द की सहज जुगत से ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ५ ॥

द्वारा फोड़ पिंड के पारा ।
अंड ब्रह्मंड तोहि देहैं लखाय ॥ ६ ॥

राधास्वामी दीनदयाल कृपाला ।
मेहर से निज घर दें पहुंचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

शब्द की झड़ियां लाग रहीं ॥ टेक ॥

सुनत घट बाजे अनेक प्रकार ।
सुरत मन इंद्री जाग रहीं ॥ १ ॥

दया गुरु मच रहा घट में शोर ।
अमी की बुंदियां बरस रहीं ॥ २ ॥

मगन होय सुरत अधर चढ़ती।
बिघनियां मग से भाग गईं ॥ ३ ॥
मेहर से राधास्वामी दई यह दात।
सखी उन महिमां गाय रहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

आज होली खेलो गुरू संग आय ॥ टेक ॥
तन मन कुमकुम भर भर मारो।
दृष्टी की पिचकार छुड़ाय ॥ १ ॥
प्रेम रंग निज घट में भर कर।
गुरु चरनन पर देव छिड़काय ॥ २ ॥
अबिर गुलाल के बादल छाये।
चहुंदिस अचरज फाग रचाय ॥ ३ ॥
सब सखियां मिल आरत गावें।
गुरु दरशन कर अति हरखाय ॥ ४ ॥
नई प्रीत और नई परतीती।
राधास्वामी हिये में दई जगाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

खिला मेरे घट में आज बसंत ॥ टेक ॥
भाग मेरा अचरज जाग रहा।
हुए अब परसन सतगुरु संत ॥ १ ॥
सुरत मन घट में दीन चढ़ाय।
कंवल जहां खिल रहे आज अगिंत ॥२॥
शब्द का निरखा घट परकाश।
मधुर मधुर धुन बजत अनंत ॥ ३ ॥
खेल रही हंसन संग कर प्रीत।
सुरत हुई सुन में अभय अचिंत ॥ ४ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी चरनन जाय मिलंत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज घट मेघा गरज रहे ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन सुर्त उमगत चाली।
बिघन वाहि बिरथा बरज रहे ॥ १ ॥

गुरु प्यारे मेरे पूरे सूरे ।
मग में रक्षा करत रहे ॥ २ ॥
काल करम और बैरी सारे ।
भय से उनके लरज रहे ॥ ३ ॥
निरख दया सर्त और सतसंगी ।
चरन राधास्वामी परस रहे ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमां जिन नहिं जानी ।
करम संग वे उलझ रहे ॥ ५ ॥

शब्द ४० ॥

आज घट दामिन दमक रही ॥ टेक ॥
घंटा संख धूम अति डारी ।
झिल मिल जोती चमक रही ॥ १ ॥
जिन घट भेद सार नहिं जाना ।
भोगन में वह अटक रही ॥ २ ॥
किरतम देवा इष्ट सम्हारा ।
करम धरम में भटक रही ॥ ३ ॥

जो सुत चरन सरन में आई।

धुन संग घट में लटक रही ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन प्रीत हुई गहिरी।

हिये में निस दिन खटक रही ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

हिल मिल गुरु संग करो री पिरीती॥ टेक॥

उमंग उमंग सेवा कर निस दिन।

धारो हिये में भक्ती रीती ॥ १ ॥

जाके मन दृढ़ गुरु बिस्वासा।

काल करम को छिन में जीती ॥ २ ॥

याते चेत पड़ो गुरु चरनन।

उमर जाय तेरी योंही बीती ॥ ३ ॥

नर देही अब दुर्लभ पाई।

बिन गुरु भक्ति जाय कर रीती ॥ ४ ॥

राधास्वामी परम पुरुष सुख दाता।

सरन गहो उन धर परतीती ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

शब्द संग सूरत अधर चढ़ाय ॥ टेक ॥
गुरु की दया संग ले अपने ।
निज घर ओर चलो तुम आय ॥ १ ॥
नभ में जाय सुनो धुन घंटा ।
जोत रूप लख गगन समाय ॥ २ ॥
गुरु मूरत का दरशन करके ।
सुन में अक्षर रूप लखाय ॥ ३ ॥
मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ।
सत्त पुरुष का दरशन पाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारो ।
धाम अनामी जाय समाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

ध्यान धर गुरु चरनन चित लाय ॥ टेक ॥
मन इंद्री सब भरम भुलाने ।
इन संग क्यों तू धोखा खाय ॥ १ ॥

सतगुरु खोज करो उन संगत।
बचन सार उन चित्त बसाय ॥ २ ॥
रूप अनूप निरख उन हित से।
बार बार दर्शन को धाय ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले जुगत कमाओ।
धुन में मन और सुरत लगाय ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावो।
राधास्वामी मेहर से लें अपनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

सुनो धुन घट में सूरत जोड़ ॥ टेक ॥
गुरु चरनन में धार पिरीती।
मन और इंद्री जग से मोड़ ॥ १ ॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हारो।
करम धरम से नाता तोड़ ॥ २ ॥
बिरह उमंग ले घट में चालो।
जोत रूप लख तिल को फोड़ ॥ ३ ॥

त्रिकुटी जाय सुनी अनहद धुन ।
सुन्न गई संग मन का छोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मिली सोहं से ।
बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ५ ॥
मगन हुई सतगुरु दर्शन पाय ।
राधास्वामी रूप लखा चितचोर ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

उमंग कर सुनो शब्द घट सार ॥ टेक ॥
यह धुन है धुर लोक की धारा ।
इसने रचन रचाई भार ॥ १ ॥
अगम रूप और अलख सरूपा ।
सत्त रूप सत शब्द बिचार ॥ २ ॥
शब्द हुआ तिरलोकी कारन ।
शब्दहि घट घट करे पुकार ॥ ३ ॥
शब्द डोर धुर पद से लागी ।
शब्द पकड़ सुर्त जावे पार ॥ ४ ॥

शब्द भेद और जुगत चलन की ।
सतगुरु तोहि बतावें यार ॥ ५ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
उन मिल कर अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये धारो ।
पहुंचावें तोहि निज घर बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

बिसारो मनुआं जग की कार ॥ टेक ॥
सारी बैस बिताई जग में ।
बिरध हुआ अब चेत गंवार ॥ १ ॥
निज घर का ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द मत धारो सार ॥ २ ॥
मन इंद्रियन को फेर जगत से ।
गुरु सरूप ध्याओ धर प्यार ॥ ३ ॥
घट में बाजे हर दम बाजें ।
उमंग सहित सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन गहो हित चित से ।
काज करें तेरा आज संवार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

अचल घर सजनी सुध लीजे ॥ टेक ॥
या जग में नित दुख सुख सहना ।
गुरु मिल आज जतन कीजे ॥ १ ॥
सतसंग बचन सुनो चित देकर ।
उमंग उमंग तन मन दीजे ॥ २ ॥
सतगुरु मेहर परख फिर घट में ।
मन सूरत धुन रस भींजे ॥ ३ ॥
अधर चढ़ो खोलो बज्र किवाड़ा ।
शब्द अमीं रस घट पीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज संवारें ।
काल करम बल सब छीजे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

चलो घर गुरु संग बांध कमर ॥ टेक ॥

सतसंग बचन हिये में धारो ।
घट में लग धुन डोर पकड़ ॥ १ ॥
सतगुरु दया संग ले अपने ।
सुरत चढ़ा दे गगन सिखर ॥ २ ॥
गुरु बल मन इंद्री को बस कर ।
काल कर्म को डाल रगड़ ॥ ३ ॥
मोह माया के बिघन अनेका ।
छोड़ जायं सब तेरी डगर ॥ ४ ॥
सत्त शब्द सुन चली सुर्त आगे ।
राधास्वामी चरन अब पकड़ जकड़ ॥५॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुनो मन घट में गुरु बानी ॥ टेक ॥
समझ सतसंग के बचन अमोल ।
प्रीत गुरु चरनन में आनी ॥ १ ॥
शब्द का भेद जुगत लेकर ।
सुरत घट में धुन संग तानी ॥ २ ॥

चरन गुरु हिये में धर बिस्वास।
सरन उन दृढ़ कर मन मानी ॥ ३ ॥
दया गुरु चढ़ी अधर सूरत।
क्षीर पिए घट में तज पानी ॥ ४ ॥
मेहर से दिया सतपुर बिस्राम।
मिले गुरु राधास्वामी महादानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

शब्द धुन सुनो त्याग मन काम ॥ टेक॥
जब लग चित भोगन में बहता।
बसै न हिरदे नाम ॥ १ ॥
याते प्रीत धरो गुरु चरनन।
मंन इंद्रियन को राखो थाम ॥ २ ॥
दया करें गुरु दें उपदेशा।
धुन में सुरत लगावो ताम ॥ ३ ॥
धर परतीत गहो गुरु सरना।
घट में पिओ अमीं रस जाम ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर बसै जाय सतपुर ।
जहां काल नहिं कृष्ण और राम ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

खेल रही सूरत फाग नई ॥ टेक ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
राधास्वामी सरन पई ॥ १ ॥
चहुं दिस धुन झनकार सुनावत ।
अमृत धारा बरस रही ॥ २ ॥
अबिर गुलाल रंग लिये हाथा ।
गुरु चरनन पर मलत रही ॥ ३ ॥
प्रेम भरी प्यारी सुरत रंगीली ।
राधास्वामी चरनन लिपट रही ॥ ४ ॥
आरत धार पड़ी चरनन में ।
राधास्वामी गोद बिठाय लई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

हिंडोला झूले सुर्त प्यारी ॥ टेक ॥

सतसंगी सब हिल मिल झूलें।

सुरत शब्द धारी ॥ १ ॥

राधास्वामी महिमां सब मिल गावें।

चरन सरन वारी ॥ २ ॥

राधास्वामी दीनदयाल सबन पर।

मेहर दृष्ट डारी ॥ ३ ॥

पूरा काज बना इक इक का।

राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

सखी देखो आज बहार बसंत ॥ टेक ॥

चलो घर श्याम धाम पारा।

खिली जहां नित फुलवार बसंत ॥ १ ॥

सखी सब आरत गाय रहीं।

चरन में राधास्वामी पुर्ष अचिंत ॥ २ ॥

करत रहीं दरशन दृष्टी जोड़।

हरख रहीं लख २ शोभ अनंत ॥ ३ ॥

अमीं की धारा हुई जारी ।
धुनन का घट में शोर मचंत ॥ ४ ॥
जो जिव जग से उबरा चाहें ।
राधास्वामी नाम जपें निज मंत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

सुरत आई उमगत गुरु के पास ॥ टेक ॥
प्रीत सहित करती सतसंगा ।
धर हिये में चरनन बिस्वास ॥ १ ॥
भोग बासना जग की त्यागी ।
गुरु चरनन बिन और न आस ॥ २ ॥
बचन सुनत हिये बढ़त उमंगा ।
सेव करत घट होत हुलास ॥ ३ ॥
दरस रस मनुआं छिन छिन लेत ।
शब्द संग सुरत चढ़त आकाश ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी बरनी न जाय ।
दिया मोहि निज चरनन में बास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरत हुई मगन दरस गुरु पाय ॥टेक॥
बचन सुन सीतल हुई मन में।
भेद पाय सुर्त शब्द लगाय ॥ १ ॥
प्रीत बढ़ी सुन सुन धुन घट में।
हिये में दृढ़ परतीत बसाय ॥ २ ॥
दया मेहर गुरु परखत छिन छिन।
उमंग उमंग सेवा को धाय ॥ ३ ॥
हरख हरख सुर्त चढ़त अधर में।
घंटा संख और गरज सुनाय ॥ ४ ॥
सारंग मुरली बीन बजावत।
राधास्वामी सन्मुख आरत गाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

नाम रंग घट में लागा री ॥ टेक ॥
सुनत गुरु प्यारे के बचना।
सोवता मनुआं जागा री ॥ १ ॥

बढ़त गुरु चरनन में प्रीती ।
तजत जग भोग और रागा री ॥ २ ॥
प्रेम अंग ले उपदेश सम्हार ।
सुनत घट अनहद रागा री ॥ ३ ॥
मेहर गुरु चढ़त सुरत गगना ।
देश माया का त्यागा री ॥ ४ ॥
चरन में राधास्वामी पहुंची धाय ।
जगा मेरा अचरज भागा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

तन मन धन से भक्ति करो री ॥ टेक ॥
कोरी भक्ति काम नहिं आवे ।
याते हिये में प्रेम भरो री ॥ १ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी चरनन में ।
और सतसंग में प्रीत धरो री ॥ २ ॥
दया करें गुरु भेद बतावें ।
तब धुन संग सुर्त अधर चढ़ोरी ॥ ३ ॥

दीन ग़रीबी धारं हिये में ।

उमंग उमंग गुरु चरन पड़ोरी ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।

भौसागर से सहज तरो री ॥ ५ ॥
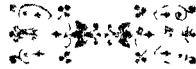
॥ प्रेम बहार भाग तीसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

छबीले छबि लगे तोरी प्यारी ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहित हुई छिन में।
मुखड़े पर मैं वारी ॥ १ ॥
अचरज दरस दिखाया मुझ को।
चरनन पर बलिहारी ॥ २ ॥
राधास्वामी अंग लगावो मेहर से।
तन मन से कर न्यारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

रंगीले रंग देव चुनर हमारी ॥ टेक ॥
ऐसा रंग रंगो किरपा कर।
जग से हो जाय न्यारी ॥ १ ॥
यह मन नित्त उपाध उठावत।
याको गढ़ लो सारी ॥ २ ॥

निरमल होय प्रेम रंग भींजे।
जावे गगन अटारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब भारी।
सुरत अगम पग धारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे मेहर करो अब।
जल्दी लेव सुधारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

रसीले छोड़ो अमृत धारा ॥ टेक ॥
यह धारा दस द्वार से उठती।
भींजे तन मन सारा ॥ १ ॥
यह धारा झनकार सुनावत।
भिन्न भिन्न धुन न्यारा ॥ २ ॥
यह धारा बिन भाग न मिलती।
पावे कोइ गुरु का प्यारा ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे हुए दयाला।
मोहिं लीना सरन सम्हारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दयाला मोहिं लीजै तारी ॥ टेक ॥
तुम्हरी दया की महिमा भारी ।
मैं हूं पतित अनाड़ी ॥ १ ॥
जग में सारी बैस बिताई ।
भरमत रहा उजाड़ी ॥ २ ॥
मेहर करो मोहिं चरन लगावो ।
शब्द भेद देव सारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी गत है अगम अपारा ।
छिन में कर दो पारी ॥ ४ ॥
मैं बल जाउं चरन पर तुम्हरे ।
तन मन धन सब वारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु पूरे ।
लीना मोहिं उबारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पियारे मेरे सतगुरु दाता ॥ टेक ॥

देखत रहूं रूप मन भावन ।
और न कोई सुहाता ॥ १ ॥
पावत रहूं अमीं परशादी ।
और नहीं कुछ भाता ॥ २ ॥
चरन कंवल सेवत रहूं निस दिन ।
और न कहीं मन जाता ॥ ३ ॥
गुन गाऊं नित चरन धियाऊं ।
और ख्याल नहिं लाता ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे बसें हिये में ।
और न चित्त समाता ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अनामी प्यारे राधास्वामी ॥ टेक ॥
गत मत तुम्हरी कोइ नहिं जाने ।
घट घट अंतरजामी ॥ १ ॥
देस तुम्हारा सब से न्यारा ।
नहीं वहां कृष्ण न रामी ॥ २ ॥

महिमा तुम्हरी अति से भारी ।
को कर सके बखानी ॥ ३ ॥
प्रेमी जन तुम चरन धियावें ।
जग से होय निःकामी ॥ ४ ॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं नित नित ।
मोहिं लीना चरन मिलानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अनंता तेरी गत नहिं जानी ॥टेक॥
अपना भेद आप तुम गाया ।
संत रूप जग आनी ॥ १ ॥
बड़ भागी जिन दर्शन पाये ।
चरनन में लिपटानी ॥ २ ॥
शब्द भेद दे लिया अपनाई ।
सूरत अधर चढ़ानी ॥ ३ ॥
जिन तुम चरनन प्रीत न आनी ।
जग में रहे अटकानी ॥ ४ ॥

मोपै दया करी राधास्वामी ।
दीना चरन ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अडोला तेरी महिमां भारी ॥ टेक ॥
प्रेम सिंध है रूप तुम्हारा ।
निज कर सोत और पोत कहारी ॥ १ ॥
दया मेहर का वार न पारा ।
सब को खैंच मिलारी ॥ २ ॥
धुन धधकार मौज से जारी ।
प्रेम दया की धार बहारी ॥ ३ ॥
अगम अलख का रूप संवारा ।
सत्त रूप होय निज करतारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मौज अस धारी ।
सब के हैं निज मात पितारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अबोला तेरी लीला भारी ॥ टेक ॥

अंस दोय सतपुर से निकसीं ।
तिरलोकी उन लीन रचा री ॥ १ ॥
माया काल धूम अति डारी ।
सब जिव लीन फंसा री ॥ २ ॥
राधास्वामी संत रूप धर आये ।
काल करम का ज़ोर घटा री ॥ ३ ॥
जिन जिन उनका बचन सम्हारा।
उन जीवन को लीन छुड़ा री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का कर अभ्यासा ।
राधास्वामी सरन हिये बिच धारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

आज गुरु आये जग तारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥
रूप उन धारा मन भावन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
लगे जो जीव चरनन से ।
छुटे वह करम भरमन से ॥

गही सबं शब्द की धारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
किया सतसंग उन चित से ।
गही सतगुरु सरन हित से ॥
मेहर से हो गए पावन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
किया राधास्वामी उन अपना ।
दूर किया जगत में खपना ॥
दई निज चरन में ठाऊं ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
गाऊं क्या महिमां राधास्वामी ।
कोई उन गत नहीं जानी ॥
दया का वार नहिं पारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

दरस गुरु भाग से मिलिया ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥

दया से संग में रलिया।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥
दीन होय मेहर गुरु पाई।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
शब्द का भेद दरसाई।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥
नाम का रंग घट लागा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
प्रेम हिये में नया जागा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥
रूप गुरु लागा अति प्यारा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
सुना घट शब्द झनकारा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी क्या गाऊं।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
चरन पर नित्त बल जाऊं।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

बचन सतगुरु सुने भारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
भेद घट का मिला सारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
लगी धुन में सुरत प्यारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
खिली पच रंग फुलवारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
जोत लख गगन गरजा री ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
चंद्र और सूर परखा री ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
अमरपुर बीन झनकारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
चरन राधास्वामी पर वारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

अजब राधास्वामी मत न्यारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥
बहत जहाँ प्रेम की धारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥
चरन गुरु भाव धर प्यारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥
सुनत धुन शब्द झनकारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥
होत अस सहज निरवारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥
चढ़त सुर्त फोड़ दस द्वारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ६ ॥
गई सतपुर्ष दरबारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ७ ॥
मेहर हुई आगे पग धारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ८ ॥
मिला राधास्वामी पद सारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मिले मोहिं आज गुरु पूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥
बजन लागे घट अनहद तूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥
मान मद मोह हुए चूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥
हुआ मन गुरु चरनन धूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥
लखा अब घट में सत नूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥
काल और करम रहे झूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ६ ॥
मेहर मोपै कीनी गुरु सूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ७ ॥
मिला अब राधास्वामी पद मूरे ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

बढ़त सतसंग अब दिन दिन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
जीव बहु लागे अब तरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
दया राधास्वामी क्या बरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
पड़े जो जीव उन चरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
छूट गया जन्म और मरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
परस गुरु पद हुए तारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
सत्तपुर हंस गत धारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
सरन में राधास्वामी निज धावन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ८ ॥